

केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर-47

चंडीगढ़-160047

KENDRIYA VIDYALAYA, SECTOR-47

CHANDIGARH-160047



2025-26





EDITORIAL BOARD

CHIEF PATRON

SHRI VIRENDER SINGH
PRINCIPAL, KV-47, CHANDIGARH

EDITOR-IN-CHIEF

MRS. NEHA SHARMA, PGT-ENGLISH

EDITORS

ENGLISH

MRS. ANITA BHALLA
PGT-ENGLISH

HINDI

MRS. RANJANA LAMBA
TGT- HINDI

SANSKRIT

MR. S.N. JHA
TGT-SANSKRIT

TECHNICAL SUPPORT

MRS. KAVITA GREWAL
COMPUTER INSTRUCTOR

STUDENT EDITORIAL COMMITTEE

English

पल्लवी, बारहवीं- क
जिया वर्मा, बारहवीं- घ

Hindi

रागिनी गुप्ता, बारहवीं-ख
हर्ष कुमार, बारहवीं- घ

Sanskrit

ऋषिता सुमन, नवीं-ख
दिया सैनी, आठवीं -ख

शुभकामना संदेश



श्रीमती प्रीति सक्सेना
उपायुक्त

प्रिय विद्यार्थियो, अभिभावको एवं विद्यालय परिवार !

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन हम सभी के लिए अत्यंत गर्व एवं प्रसन्नता का विषय है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा, चिंतन और अभिव्यक्ति को स्वर देती है, बल्कि विद्यालय की गतिविधियों, उपलब्धियों और संकल्पों को भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है।

मुझे हर्ष है कि यह विद्यालय शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ नैतिक, सांस्कृतिक एवं सह-पाठ्य गतिविधियों में भी अनुकरणीय कार्य कर रहा है।

इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी कल्पनाशीलता, लेखन-क्षमता और विचारों को अभिव्यक्त करने का एक सुंदर मंच प्राप्त होता है। यह मंच उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायक सिद्ध होता है और उन्हें एक जागरूक नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है।

मैं प्राचार्य, शिक्षकगण, सम्पादकीय टीम एवं सभी विद्यार्थियों को इस सफल प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ।

शुभकामनाओं सहित

श्रीमती प्रीति सक्सेना
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ संभाग

संदेश



एयर कमोडोर दीपक पंत
अध्यक्ष

प्रिय विद्यार्थियो, अभिभावको, शिक्षको एवं पाठकगण !

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि केंद्रीय विद्यालय सेक्टर-47 चंडीगढ़ (पहली पाली) की विद्यालय-पत्रिका प्रकाशित हो रही है। विद्यालय-पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मकता, अभिव्यक्ति और बौद्धिक विकास का जीवंत प्रमाण होती है।

विद्यालय केवल ज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के निर्माण की एक सशक्त प्रयोगशाला भी है। हमें गर्व है कि विद्यालय के शिक्षक विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के साथ उनके सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। मैं समस्त विद्यालय परिवार को इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वे भविष्य में भी इसी उत्साह के साथ विद्यालय को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

विद्यालय प्रबंधन समिति की ओर से मैं सभी शिक्षकों, अभिभावकों और कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ, जिनके सतत सहयोग से विद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

आइए, हम सब मिलकर शिक्षा के इस पवित्र मंदिर को और अधिक ऊर्जावान और मूल्य-निष्ठ बनाने का संकल्प लें।

शुभकामनाओं सहित

एयर कमोडोर दीपक पंत

अध्यक्ष

विद्यालय प्रबंधन समिति

केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 47, चंडीगढ़

प्राचार्य की कलम से



श्री वीरेन्द्र सिंह
प्राचार्य

विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन हमारे लिए गर्व और आनंद का अवसर है। यह केवल लेखों और कविताओं का संग्रह नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की कल्पनाओं, सपनों और रचनात्मकता का जीवंत आईना है।

प्रिय विद्यार्थियो

आप ही हमारे देश का भविष्य हैं। स्मरण रहे कि सफलता केवल पढ़ाई में अच्छे अंक लाने से नहीं मिलती, बल्कि अनुशासन, परिश्रम, सकारात्मक सोच और अच्छे संस्कारों से मिलती है। हर चुनौती एक अवसर है, और असफलता केवल अनुभव का दूसरा नाम है। पढ़ाई के साथ-साथ कला, खेल और सृजनात्मक गतिविधियों में भाग लीजिए—यही आपको आत्मविश्वासी और संपूर्ण व्यक्तित्व वाला इंसान बनाएगा।

प्रिय अभिभावको

आप बच्चों के जीवन की पहली पाठशाला हैं। उनका आत्मविश्वास और नैतिक मूल्यों की नींव घर पर ही पड़ती है। कृपया बच्चों की छोटी-छोटी उपलब्धियों की सराहना करें, असफलताओं में उनका संबल बनें और उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ खेल, संगीत, कला तथा अन्य गतिविधियों के लिए भी प्रोत्साहित करें। विद्यालय और परिवार का मिला जुला प्रयास ही बच्चों को ऊँचाइयों तक ले जाता है।

प्रिय शिक्षको,

आप समाज निर्माता हैं। विद्यार्थियों के जीवन को आकार देने की महान जिम्मेदारी आपके कंधों पर है। अपने ज्ञान और अनुभव के साथ-साथ विद्यार्थियों को मानवीय मूल्य, संवेदनशीलता और जीवन कौशल भी सिखाएँ। आपकी प्रेरणा से ही वे ईमानदार, आत्मनिर्भर और जिम्मेदार नागरिक बन पाएँगे।

मैं इस पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और संपादकीय दल को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि यह पत्रिका आने वाले वर्षों तक हमारी रचनात्मकता और प्रगति का मार्गदर्शन करती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित

श्री वीरेन्द्र सिंह

प्राचार्य

केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर-47, चंडीगढ़

उप-प्राचार्या का संदेश



श्रीमती सुनीता रानी
उप-प्राचार्या

प्रिय विद्यार्थियों, शिक्षको एवं अभिभावको

विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन हम सबके लिए गर्व और आनंद का विषय है। यह पत्रिका केवल लेखों का संकलन नहीं है, बल्कि यह हमारे विद्यार्थियों की प्रतिभा, कल्पनाशीलता और उनके विचारों का सजीव प्रतिबिंब है।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, रचनात्मकता और संवेदनशीलता का विकास करना है। हमारे विद्यार्थी जब लेखन, कला, विज्ञान और खेल के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय देते हैं, तो वे न केवल स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं, बल्कि समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनते हैं।

प्रिय विद्यार्थियों, आप ही भविष्य के निर्माता हैं। ईमानदारी, अनुशासन और परिश्रम के साथ आगे बढ़ें। स्मरण रखें—हर सफलता की नींव कठिन परिश्रम में छिपी होती है। अपने विचारों को सकारात्मक रखें और अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहें।

मैं इस पत्रिका से संपादन में जुड़े सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों को साधुवाद देती हूँ। आशा है कि यह पत्रिका सभी के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी और आने वाले वर्षों में भी आपके रचनात्मक व्यक्तित्व को निखारती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित

श्रीमती सुनीता रानी
उप-प्राचार्या
केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर-47, चंडीगढ़(पहली पाली)

मुख्य अध्यापिका का संदेश



श्रीमति रविन्द्र कौर बावा

मुख्य अध्यापिका

शिक्षा तथ्यों को सीखना नहीं, बल्कि मन को सोचने के लिए प्रशिक्षित करना है। विद्यालय पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जो पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों का हिस्सा बनकर छात्रों की उपलब्धियों को दर्शाता है। शिक्षा का उद्देश्य स्वस्थ, सक्रिय, परिपक्व, ज़िम्मेदार और अनुशासित छात्र तैयार करना है।

मैं अपने सभी प्राथमिक शिक्षकों की टीम की सराहना करती हूँ और उन्हें धन्यवाद देती हूँ जो छात्रों के सभी पहलुओं से संबंधित विकास को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

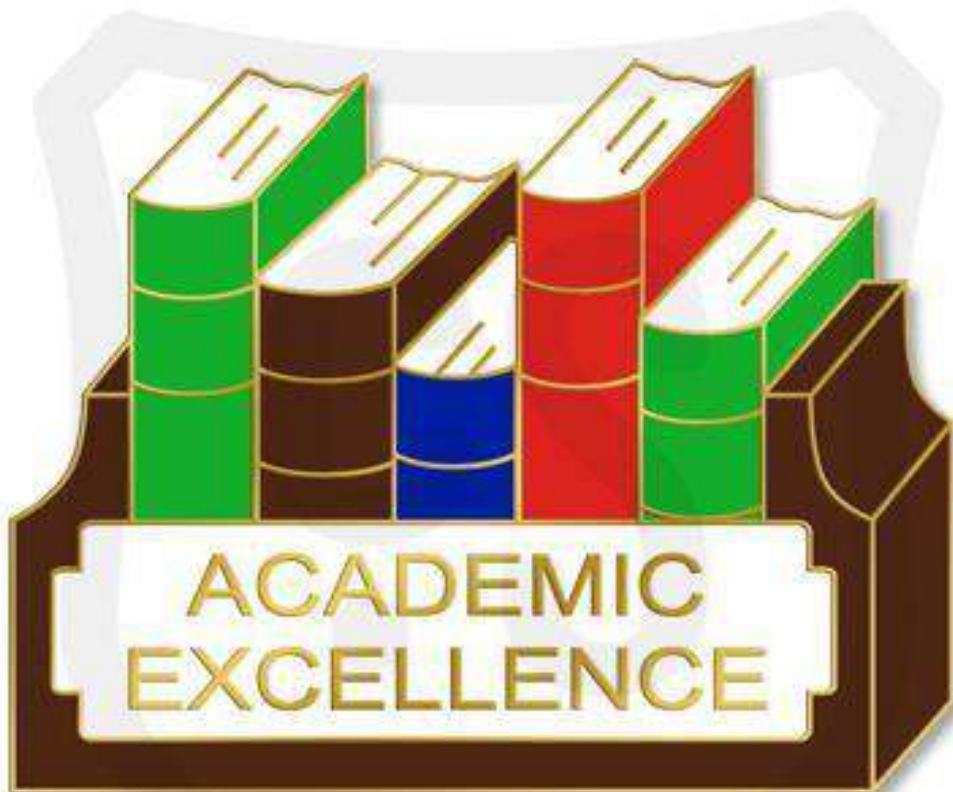
मैं सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं सम्पादक मंडल को विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन करने के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ।

शुभकामनाओं सहित

श्रीमति रविन्द्र कौर बावा

मुख्य अध्यापिका

केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर-47, चंडीगढ़(पहली पाली)





केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर 47, चंडीगढ़
KENDRIYA VIDYALAYA, SECTOR 47, CHANDIGARH

Congratulations to Our Achievers



Joyti Devi
Science 94.8%



Sanskaar Arora
Science 93.4%



Diksha
Science 92.6%



Akshara Rawat
Commerce 90.4%



Jaskaran Singh
Commerce 88.8%



Jyoti Verma
Commerce 86.4%



Anshika
Humanities 92.6%



Anjali
Humanities 82.6%



Manika
Humanities 82.6%



Arpita
Humanities 81%



Shail Shree
Class X 96.2%



Manan Sharma
Class X 94.4%



Krishna Thakur
Class X 94.2%

हमें नाज़ है तुम पर!



केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर 47, चंडीगढ़ KENDRIYA VIDYALAYA, SECTOR 47, CHANDIGARH

Our Special Achievers

हमें नाज़ है तुम पर.....



SANSKAAR ARORA
SELECTED IN NDA
Secured AIR 31 (NDA)



YUVRAJ SINGH
Won Global Award & Bronze Medal
for Outstanding Achievement in American
Mathematics Olympiad 2024 & representing India
in Singapore International Mathematics Olympiad Challenge 2025



KANISHKA GHILDIYAL, Class XI
Secured 3rd Position in 52nd KVS RSBVP 2024-25 (National Level)



ARADHYA SINGH Class IX
Got selected for INSPIRE Award Scheme
(Govt. of India Ministry of Science and Technology)



JOYTI DEVI
100/100 in Hindi in Class XII

JEE Mains Qualifiers



S SRINIVAS REDDY 99.07%



ABHINAV DUBEY 96.03%



PRIYANSHU RAJ 94.33%



SANSKAAR ARORA 93.41%



केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर 47, चंडीगढ़
KENDRIYA VIDYALAYA, SECTOR 47, CHANDIGARH

शिक्षक-स्वर्ण एवं रजत प्रमाण पत्र 2024-25



श्रीमती पूनम शर्मा, पीजीटी
भौतिक विज्ञान-स्वर्ण प्रमाण पत्र
(PI-73.3)



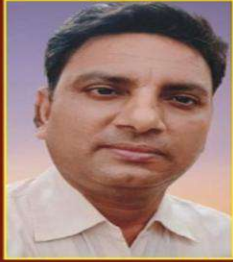
श्रीमती अंशु सिंगला, पीजीटी
वाणिज्य-स्वर्ण प्रमाण पत्र
(PI-68.45)



सुश्री ममता पाल, पीजीटी
इतिहास-रजत प्रमाण पत्र
(PI-71.88)



श्रीमती नेहा शर्मा, पीजीटी
अंग्रेजी-रजत प्रमाण पत्र
(PI-66.18)



श्री लिख्मण राम, पीजीटी
हिंदी-रजत प्रमाण पत्र
(PI-63.36)



श्रीमती मोनु सहगल, पीजीटी
गणित-रजत प्रमाण पत्र
(PI-58.53)



श्रीमती रुचा मित्तल, टीजीटी
गणित-स्वर्ण प्रमाण पत्र
(PI-84.5 मानक गणित, 78.84 बुनियादी गणित)



श्रीमती रंजना लाम्बा, टीजीटी
हिन्दी-स्वर्ण प्रमाण पत्र
(PI-80.74)



श्रीमती गुरप्रीत कौर, टीजीटी
अंग्रेजी-स्वर्ण प्रमाण पत्र
(PI-75.68)



श्री कमल किशोर, टीजीटी
मानक गणित-स्वर्ण प्रमाण पत्र
(PI-73.15)



सुश्री रश्मि पाल, टीजीटी
सामाजिक विज्ञान-स्वर्ण प्रमाण पत्र
(PI-69.6)



श्री सुरिंदर कुमार, टीजीटी
हिन्दी-स्वर्ण प्रमाण पत्र
(PI-67.62)



सुश्री सुरेन्द्र कौर भट्टला, टीजीटी
अंग्रेजी-स्वर्ण प्रमाण पत्र
(PI-63.4)

आपके अथक परिश्रम और उत्कृष्ट परिणाम के लिए हार्दिक धन्यवाद



Achievements in Sports & Games

In KVS Sports Meet 2025

LEVEL	Name of the Event	Number of Participants	Position Secured
Regional Level	Athletics	28	22
Regional Level	Boxing	2	2
Regional Level	Chess	1	1
Regional Level	Cricket	4	2
Regional Level	Shooting	2	2
Regional Level	Skating	4	4
Regional Level	Swimming	2	2
Regional Level	Taekwondo	9	9
Regional Level	Volleyball	1	1
Regional Level	Yoga	4	2

Outside KVS

Name of the Event	No of Participants	Position secured
Chandigarh Relay Championship	6	6
Chandigarh State Boxing Championship	1	1





Activities of Scouts and Guides

This unit has the strength together as given below-

No. of Cubs 72

No. of Bulbuls 71

No. of Scouts 142

No of Guides 127

Cub Masters-02, Flock Leaders-06, Scout Masters-07, Guide Captains-05

Troop meetings for Scouts and Guides are taken regularly on every Wednesday during Mass P T hour as well as during CCA period on Saturdays.

Eight Scouts and eight Guides of our Vidyalaya attended Rajya Testing Camp 2024-25 and happy to say that all are Qualified.

Eight Scouts and Eight Guides attended Tiritiya Sopan Testing Camp and all are Qualified and got certificates.

Eight Cubs and Eight Bulbuls participated in Cubs & Bulbuls Utsav and bagged many prizes in various events conducted.

1. Clay Modelling
2. Bulbul Greeting
3. Cub Greeting Position
4. Drawing Competition
5. Group Song
6. OVER ALL CHAMPIONSHIP

Dwitiya Sopan, ChaturthaCharan / Heerakapankha Up-grading camp was conducted in our Vidyalaya. Thirty Scouts and twenty-Four Guides were eligible and the Testing camp was conducted. On the second day there was a rally and cleanliness drives were taken in full spirits.

Camp Fire was also organized in the evening on the first day.

We proudly say that our Vidyalaya has a COLOUR-Party consisting of 24 Members trained by Mr. S. N Jha.

All Scouts and Guides as well as Cubs and Bulbuls were given a lot of scope to think and do and express their hidden ideas.

Our Vidyalaya organizes All Faith Prayer meetings in a befitting manner on various days like KVS Foundation Day, Communal Harmony week, Martyrs Day, and Thinking Day.



A Brief Report on CLA

PRIMARY SECTION (FOUNDATIONAL STAGE)		
CLA 2025-26		
S.NO	TYPE OF ACTIVITY	NAME OF THE ACTIVITY
1	House Meeting	Distribution of houses and clubs
2	Enrichment Activity	Picture Narration- Language Enrichment
3	Club Activity	Eco/ Literacy Club Activity & Cub- BulBul Activity
4	Inter House Competition	English Recitation Competition
5	Enrichment Activity	Collage Making-Art & Craft Enrichment
6	Inter House Competition	Hindi Story Telling Competition
7	Club Activity	Eco/ Literacy Club Activity & Cub- BulBul Activity
8	Inter House Competition	Group Dance Competition
9	Enrichment Activity	Language game- Language Enrichment
10	Enrichment Activity	Dramatic/Fantasy Play- Language Enrichment
11	Inter House Competition	Mono Acting Competition
12	Club Activity	Eco/ Literacy Club Activity & Cub- BulBul Activity
13	Inter House Competition	Hindi Recitation Competition
14	Club Activity	Eco/ Literacy Club Activity & Cub- BulBul Activity

SECONDARY SECTION	
SR.NO.	ACTIVITY
1	FORMATION OF STUDENT COUNCIL
2	CALLIGRAPHY (ENGLISH AND HINDI)
3	BOOK MARK MAKING
4	PAPER BAG/ FOLDER MAKING
5	POEM RECITATION (HINDI)
6	SLOGAN WRITING (INTERNATIONAL YOGA DAY)
7	INTER-HOUSE DISPLAY BOARD DECORATION
8	COLLAGE MAKING (ART AND CRAFT)
9	CREATIVE WRITING (ENGLISH)
10	INVESTITURE CEREMONY
11	BOOK REVIEW (HINDI)
12	QUIZ COMPETITION (SCIENCE/MATH)
13	RAKHI/'THANK YOU' CARD MAKING
14	GREETING CARDS FOR SOLDIERS
15	DEBATE COMPETITION (ENGLISH)
16	PAINTING COMPETITION
17	EXTEMPORE SPEECH (HINDI)
18	HINDI PAKHWADA

Success Story & Best Practices



Story of Yuvraj Singh - World Champion in Mathematics

KVS RO Chandigarh



Yuvraj Singh, a talented student of Kendriya Vidyalaya, Sector 47, Chandigarh, has brought immense pride to the nation with his extraordinary achievements in Mathematics on international platforms. His journey reflects dedication, brilliance, and the power of guidance.

In September 2025, Yuvraj created history by winning the Gold Medal, Trophy, and the title of World Champion in Mathematics at the Global League of Winners Inc., held in Malaysia, from 30th August to 2nd September 2025. Competing among the world's finest young minds, his victory placed India firmly on the map of mathematical excellence.

Two months earlier, he had represented Team India at the Singapore International Mathematics Olympiad Challenge (SIMOC-2025). Out of 2,480

contestants from 34 countries, Yuvraj secured two Bronze Medals, achieving World Rank-3 in both the Country Team Round and the Individual Master Minds Global Final Round.

Yuvraj Singh's Achievements

- World Champion 2025 – Gold Medal & Trophy at Global League of Winners Inc., Malaysia
- SIMOC-2025, Singapore
Two Bronze Medals
World Rank-3 (Team Round & Master Minds Final)
- AMO-2024, USA
Global Bronze Medal
State Rank-1, Country Rank-8, Global Rank-16

His pathway to SIMOC began with the American Mathematics Olympiad (AMO-2024), organised by Southern Illinois University, USA. There,

Yuvraj won the Global Bronze Medal, along with State Rank-1, Country Rank-8, and Global Rank-16.

Since joining Kendriya Vidyalaya in 2021, Yuvraj has displayed remarkable consistency, analytical thinking, and problem-solving skills, nurtured by his teachers, the leadership of his Principal, and the support of his parents. His family believes that the perfect balance of school mentorship and home encouragement gave him the confidence to excel on the global stage.

Yuvraj Singh's achievement is not just a personal triumph but also a moment of National Pride. His success shines as an inspiration, showing that with perseverance, guidance, and hard work, Indian students can conquer the world of academics.





Sanskaar Arora Class- XII (Science)

- Selected in National Defence Academy for the 154th course for Airforce (Flying Branch)
- AIR 31 in overall merit
- AIR 2 for Air Force flying merit
- NCC A certificate holder with special achievement being Felicitated with Best Cadet during the Combined Annual Training Camp
- Participated in KVS national Children science congress and was selected for Nationals
- Was also selected in INSPIRE and awarded scholarship of 10000
- Participated in training programs spanning over 3 months at CSIO Chandigarh



Nancy
SELECTED IN MBBS, GMCH,
SECTOR 32, CHANDIGARH



Kunal Sharma
SELECTED IN MBBS, GMCH,
SECTOR 32, CHANDIGARH

Eco Club Activities Report

"Celebrating Environmental Awareness & Action"

The Eco Club of our school has actively participated in creating environmental awareness and promoting sustainable practices throughout the academic year. With a deep commitment to protecting nature and spreading awareness among students, the Eco Club organized various programs, competitions, and activities in connection with significant international and national days.

➤ Important Days Celebrated:

We celebrated the following key environmental and health awareness days with great enthusiasm and educational value:

- ❖ Earth Day (April 22)
- ❖ World Health Day (April 7)
- ❖ World Population Day (July 11)
- ❖ World Environment Day (June 5)
- ❖ World Ozone Day (September 16)
- ❖ World Wildlife Day (March 3)
- ❖ Wildlife Week (October 2 to October 8)
- ❖ Akshay Urja Diwas (August 20)

On these occasions, special assemblies, speeches, skits, and awareness sessions were held to educate students on the importance of protecting our planet and improving our health and lifestyle.

➤ Competitions Conducted:

To encourage student participation and creativity, the Eco Club organized a wide range of competitions across classes:

- ❖ Poster Making Competition – to creatively express environmental issues
- ❖ Essay Writing Competition – on topics like "My Earth, My Responsibility" and "Renewable Energy: The Future"

- ❖ Quiz Competitions – testing knowledge on biodiversity, climate change, and general environmental awareness

Slogan Writing Competition – Catchy and thought-provoking slogans were created by students

Rallies – Vibrant eco-rallies were conducted around the school and nearby areas to raise awareness among the public

Campus Clean-Up Program – The students participated in cleaning the school campus, planting saplings, and creating waste segregation zones

Highlights of the Year:

- ❖ Students took pledge to reduce plastic usage, conserve water and energy, and protect wildlife.
- ❖ A sapling plantation drive was undertaken during Environment Day.
- ❖ Reusable and eco-friendly materials were promoted within the school premises.
- ❖ Special emphasis was placed on renewable energy awareness on Akshay Urja Diwas.
- ❖ Health and hygiene awareness sessions were conducted during World Health Day.
- ❖ Let's continue to “Be the Change” we want to see in the environment.





List of Activities and Achievements in the field of Science

S.No.	Name of Guide Teacher	Activity	Participation & Achievement
1.	Mrs. Geetamani Khora	Vidyarthi Vigyan Manthan (VVM)	12 students participated
		Rashtriya Stariya Vigyan Pradarshani(RSVP)	Kanishka, Class XI selected for National Level participation
2.	Mrs. Poonam Sharma	National Space Day Celebration	Celebrated at school level
		STEM Week celebration	Celebrated at school level
		Visit to CSIR-IMTECH	12 students of Clas XII visited the lab
		NDA selection	One student-Sanskaar Arora selected for NDA (AIR Rank -31)
3	Mrs. Suman Bala	Mega Tinkering Day	Prepared vacuum pump
		One Day as a Scientist (ODAS)- Visit to CSIR-IMTECH	40 students visited the lab.
		National Space Day celebration at IISER, Mohali	60 students celebrated
		PRAYAAS by NCERT	01student- Shail Shree registered
		NEET-2025	02 students cracked the Exam. and selected for MBBS Kunal Sharma Nancy (Got admission in GMCH - 32, Chd.)
		RSVP	Ragini of Class XII got 2 nd position in seminar.
4	Mrs. Malika	INSPIRE – MANAK Award-2024	Aradhya of class X -A got selected under INSPIRE MANAK
		YUVIKA - 2024	40 Students registered
		IISER Vigyan Pratibha Programme	20 students attended two days camp at ZIET Chandigarh
		One day as a scientist programme by GOI	19 students from 9th and 10th took part in the programme conducted at CSIR IMTECH lab, Chandigarh.
		STEM Week celebration	Conducted space quiz and made STEM wall
		Wildlife Quiz	70 students took part in quiz from classes 6-9, 3 students got selected at regional level.
		IISE Resource person conducted learning units with class-VI-IX in Vidyalaya	Hands-on-activities with 60 students were carried out

Report on achievements and development of Primary Section

The Primary Section of our school continues to make significant progress in academic performance, co-curricular activities, and holistic development of students. The academic year has been marked by remarkable achievements and steady growth in all areas of teaching and learning.

1. Academic Development

- **Students demonstrated improvement in literacy and numeracy skills through regular assessments, remedial teaching, and innovative classroom practices.**
- **Introduction of Foundational Literacy and Numeracy (FLN) activities has strengthened reading, writing, and problem-solving abilities.**
- **Regular use of activity-based learning has encouraged curiosity and active participation in classrooms.**

2. Co-Curricular Achievements

- **Participation in art, music, and dance competitions helped students showcase their creative talents.**
- **Sports activities such as athletics, yoga, and team games have improved physical fitness, teamwork, and discipline.**
- **Celebration of special days and cultural festivals promoted values of unity, respect, and cultural awareness.**

3. Skill Development

- **Integration of 21st-century skills like communication, collaboration, creativity, and critical thinking through projects and group activities.**
- **Students were introduced to basic computer literacy and digital learning tools.**
- **Focus on life skills education such as cleanliness, empathy, sharing, and responsibility.**

4. Teacher's Role and Innovation

- **Teachers adopted interactive pedagogical strategies including storytelling, role-play, and experiential learning.**
- **Regular workshops and training sessions enhanced teaching quality.**
- **Special attention was given to slow bloomers through individualized support.**

5. Overall Progress

- **The primary section has shown balanced growth in academics, personality development, and social values.**
- **Students are becoming more confident, expressive, and responsible learners.**
- **Parents have expressed satisfaction with the holistic development of their children.**

Conclusion:

The Primary Section has achieved commendable progress during this academic year. With the continued efforts of teachers, parents, and students, we aim to reach greater milestones in the coming years, ensuring that every child blossoms to their fullest pedagogical strategies including storytelling, role-play, and experiential learning.





CLASS IA



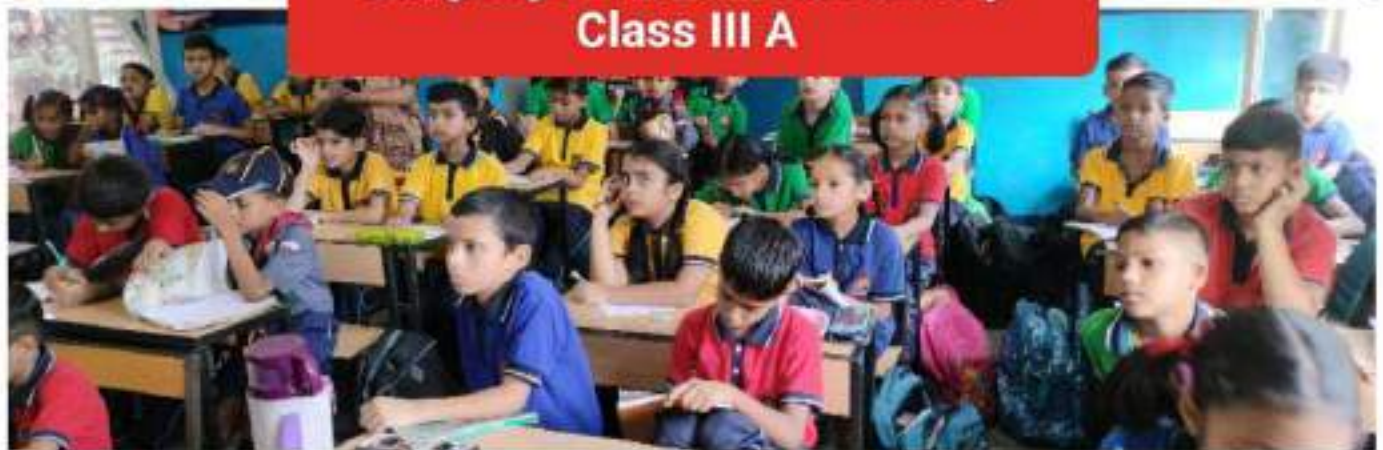
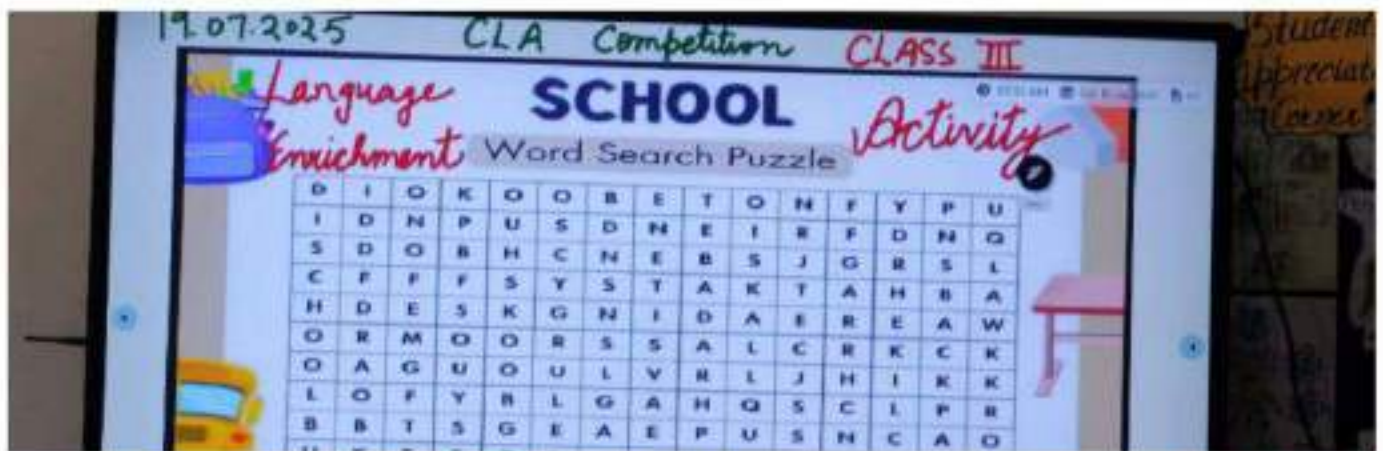
VISIT TO KITCHEN GARDEN





Dance competition





CLASS 1A









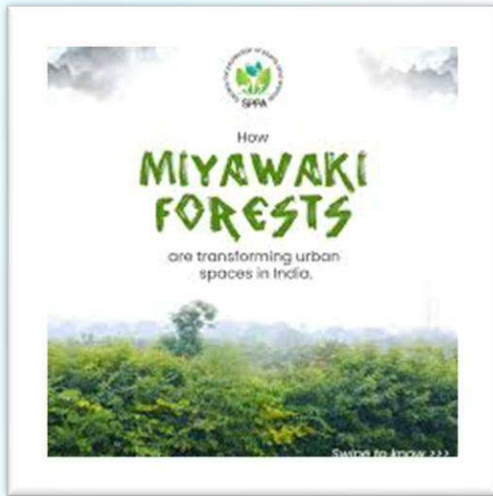


Health talk at 47 Dispensary



TLM Exhibition





MIYAWAKI FOREST PROGRAM



एकता पर्व एवं कला उत्सव

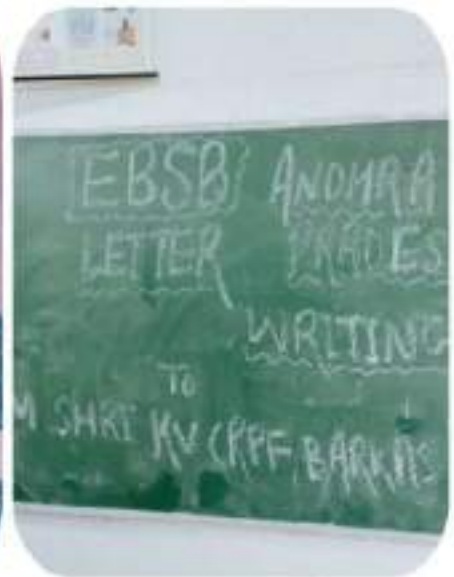
केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 47 चंडीगढ़ के छात्र छात्राओं ने केविसं एकता पर्व एवं कला उत्सव की विभिन्न विद्यालय स्तर, संकुल स्तर तथा संभागीय स्तर की प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। और उत्तम प्रदर्शन करते हुए संम्भागीय स्तर पर 2D एकल चित्रकला प्रतियोगिता में वैष्णवी ने प्रथम स्थान व 3D समूह कला प्रदर्शन में ऋषिता सुमन व अर्शनीत कौर ने प्रथम स्थान हासिल किया। कला उत्सव समूह गान में तृतीय एवं चित्रकला में तृतीय स्थान पीयूष ने हासिल किया। Artefacts प्रदर्शनी में कक्षा 12द के विद्यार्थियों जिया वर्मा व साहिल कुमार ने भाग लिया। उनका मॉडल पोंगल का त्योहार, को संम्भागीय स्तर के लिए चुना किया गया।





**केन्द्रीय विद्यालय सेक्टर-47 चंडीगढ़
वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के वि बारकस हैदराबाद के साथ ।**





**पत्र लेखन (एक भारत श्रेष्ठ भारत)
केन्द्रीय विद्यालय सेक्टर-47 के विद्यार्थियों द्वारा
केन्द्रीय विद्यालय बारकस, हैदराबाद के विद्यार्थियों के
लिए।**

हिन्दी विभाग



प म स र क

य म व
भ फ त

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की रिपोर्ट

विद्यालय में राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं प्रोत्साहन हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है। समिति के सदस्यों के रूप में सभी प्रमुख विभागाध्यक्षों एवं शिक्षकों को शामिल किया गया है।

समिति द्वारा प्रत्येक तिमाही में प्राचार्य की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया जाता है तथा राजभाषा हिन्दी से जुड़े विषय पर कार्यशाला आयोजित की जाती है। समिति द्वारा प्रत्येक तिमाही की प्रगति रिपोर्ट क्षेत्रीय कार्यालय को भेजी जाती है तथा क्षेत्रीय कार्यालय से प्राप्त समीक्षा रिपोर्ट का अनुपालन किया जाता है। विद्यालय के प्राचार्य द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठकों में हिस्सा लिया जाता है।

सितम्बर माह में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन हेतु विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं तथा 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा विद्यालय में प्रशासनिक कार्यों तथा पत्राचार में हिंदी भाषा के अधिकतम प्रयोग पर बल दिया जाता है।

'गुम्मा से मांडवी तक'

(साहसिक क्रिया-कलापों के दौरान प्राप्त अनुभव)



पर्वतों का सौंदर्य मुझे सदैव मंत्रमुग्ध करता रहा। कश्मीर के मनोहर दृश्य आज भी स्मृति पटल पर अंकित हैं। पहलगाम का सौंदर्य भुलाए नहीं भूलता। उसके बाद शिक्षकों एवं सहपाठियों के साथ नैनीताल, अलमोड़ा, कौसानी, रानीखेत इत्यादि स्थलों की यात्रा भी रोमांचक रही। कसौली तथा चैल जैसे पर्वतीय स्थलों पर भी एक-दो बार जाने के अवसर प्राप्त हुए। ये अनुभव नौकरी में आने से पहले के थे।

केन्द्रीय विद्यालय में नौकरी पाने के पश्चात् जहाँ आत्मनिर्भरता का एहसास हुआ वहीं अनेक ज्ञानवर्द्धक बातें सीखने को मिली। समय-समय पर विद्यार्थियों के साथ अनेक स्थलों पर भेजा गया, जहाँ कई प्रकार के अनुभव हुए। पटियाला में काम करते हुए एक बार साहसिक क्रिया-कलापों के दौरान रोहड़ू (शिमला) जाने का अवसर प्राप्त हुआ जिसमें हम दो मार्ग दर्शिकाएँ, एक मार्ग दर्शक तथा पचास विद्यार्थी शामिल थे। विद्यार्थियों में 39 लड़कियाँ तथा 11 लड़के थे।

हज़ारों मील लम्बी यात्रा एक कदम से आरंभ होती है, सत्य है। पटियाला से शिमला तक का सफर बस द्वारा किया, जो सामान्य रहा। शिमला पहुँचते ही वर्षा की फुहारों ने हमारा स्वागत किया। मैदानी इलाके की गर्मी से निकल कर ठंड के घेरे में आ गए। सच पूछो तो उस समय वह बारिश अच्छी नहीं लगी। इतना सामान और के०वि० शिमला तक की चढ़ाई। यद्यपि मदद के लिए कुली थे लेकिन चलना कठिन लग रहा था। उन्हें इतना सामान उठाते देख कर ही हिम्मत बँधी हुई थी। के०वि० शिमला पहुँच कर हमने कुछ देर विश्राम किया। रात को रिज पर टहलने गए तथा भोजन किया।

अगली सुबह रोहड़ू के लिए यात्रा आरंभ हुई। हम मिनी बस में सफ़र कर रहे थे। मैं ऑचल मैडम के साथ बैठी थी तथा श्री रकम चंद आगे बैठे हुए थे। बच्चे आपस में बातचीत कर रहे थे तथा खुश थे। उस समय घर की बहुत याद आई विशेष कर बेटी की। लगा जैसे भीतर ही भीतर कुछ टूट रहा था। तब वे पर्वतीय दृश्य बेमानी लगने लगे। अगले ही पल मैंने बस में बैठे बच्चों को एक बार फिर देखा और सोचा कि इनके माता-पिता तो धन्य हैं जो हमारे हवाले करके निश्चित हो गए। उन बच्चों के चेहरे में मुझे अपनी बेटी के चेहरे का आभास हुआ, तब सब ठीक लगने लगा। खड़ा पत्थर पहुँचने पर हमने दोपहर का भोजन किया और कुछ देर वहाँ रुकने के बाद हमने आगे का सफर प्रारंभ किया। लगभग चार बजे हम अपने बेस कैम्प गुम्मा पहुँचे। वहाँ पब्लर नदी ने हमारा स्वागत किया। दस मिनट चलने के बाद अपने खेमे हमें दिखाई दिए। कैम्प इंचार्ज श्री अनिल तथा उनके सहयोगी श्री विजय कुमार ने हम सभी से बहुत अच्छे ढंग से बातचीत की तथा जलपान की व्यवस्था की। इसके बाद बच्चों को लेकर लेक्चर दिया गया। थकावट ज़्यादा थी इसलिए रात के भोजन के बाद सभी जल्दी सो गए।

अगले दिन बच्चों को धम्मवाड़ी ले जाया गया जहाँ उन्हें रस्सी की सहायता से पर्वत से नीचे उतरना सिखाया गया। हमने भी इस गतिविधि में भाग लिया। तीसरे दिन नदी पार करना सिखाया गया। दो दिन बेस कैम्प में बिताने के बाद हम लरोट पहुँचे। यह बहुत ही खूबसूरत जगह लगी। यहाँ शांति थी लेकिन पब्लर नदी की आवाज़ अभी तक कानों में गूँज रही थी। लरोट में ठंड अधिक थी। वहाँ के इंचार्ज श्री दीपेन चौहान का व्यवहार अच्छा था तथा उन्होंने इतने ठंडे स्थान पर हर संभव सुविधा प्रदान करने की कोशिश की। हमने यहाँ भी दो दिन बिताए। कुछ दर्शनीय स्थलों पर भी ले जाया गया। अब मुख्य यात्रा मांडवी की थी। वह चढ़ाई अत्यंत कठिन थी।

दो घंटे की चढ़ाई हमने चार घंटे में पूरी की। मंज़िल सामने थी कि बारिश होने लगी तथा हल्की-हल्की हिम गिरने लगी। यहाँ लरोट से भी अधिक ठंड थी। सभी अपने-अपने टेंट में चले गए। वहाँ के इंचार्ज श्री पंकज ने सभी के लिए चाय का इंतज़ाम करवाया तथा रात का खाना भी खेमे में ही दिया।

अगले दिन अच्छी धूप निकल आई। बच्चों को और ऊँचाई पर ले गए जहाँ बर्फ देखने को मिली। सभी को वहाँ बहुत आनंद महसूस हुआ। यद्यपि मांडवी बहुत खूबसूरत लगा लेकिन वहाँ सभी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। शौचालय ऐसी जगह बनाए गए थे जहाँ तक पहुँचने में दस मिनट लगते थे। गिर कर चोट लगने का भी खतरा था। पूरे ट्रैक में कोई महिला प्रशिक्षक दिखाई नहीं दी, केवल लरोट में आशा मैडम मिली थी। खाना बर्तन में डालते ही ठंडा हो जाता था। ऐसी जगह यदि हॉट केस होते तो अच्छा रहता। बिजली का प्रबंध किसी कैंप में नहीं था।

कई खामियों के बाद भी हमें लगा कि अपने घरों से इतनी दूर, ऐसे स्थानों पर ये लोग कितना प्रयास कर रहे हैं। कुछ और प्रयासों के माध्यम से इन साहसिक क्रिया-कलापों को और अधिक सफल बनाया जा सकता था। मांडवी के पश्चात् हम लरोट वापस आए तथा दोपहर के भोजन के बाद खरशाली के लिए रवाना हुए। यहाँ ठंड कम थी तथा इंचार्ज श्री प्रताप ने सुव्यवस्था कर रखी थी।

यहाँ दो दिन बिताने के बाद हम वापस बेस कैंप गुम्मा पहुँचे। श्री अनिल ने हमारा स्वागत किया। जलपान के बाद हम पब्लर नदी के किनारे बैठ गए। हम आपस में बातें करने लगे कि सफर में भले ही कितनी मुश्किलें आईं लेकिन ये दिन बहुत याद आएँगे जिन्होंने हमें बहुत कुछ सिखा दिया। कठिनाइयाँ सहकर ही सुख मिलता है। ट्रेकिंग के दौरान जब भी हिम्मत मंद पड़ने लगती तो स्वामी विवेकानंद की यह पंक्ति याद आती -

"Strength is life, Weakness is death"

कुछ बच्चों ने अस्वस्थ होने के बावजूद भी ट्रेकिंग के दौरान हिम्मत नहीं हारी और प्रत्येक कार्य को लगन से किया। उन्हें प्रशस्ति प्रमाण पत्र दिए गए।

अब समय वापसी का था। हमने सभी से विदा ली। रास्ते में हाटकोटी मंदिर में देवी के दर्शन किए। यह मंदिर बहुत खूबसूरत लगा तथा असीम शांति प्राप्त हुई। इसके बाद फिर बस में जा बैठे। वह रात के ० वि० शिमला में रहने के बाद अगले दिन हमने पटियाला के लिए सफर प्रारंभ किया और लगभग चार बजे (सायं) पटियाला पहुँच गए। ईश्वर को मन से धन्यवाद दिया कि हमारी यात्रा सफल रही। साथियों का पूरा सहयोग मिला। खूबसूरत दृश्यों को कैमरे में कैद कर लिया था, जो उन अनमोल लम्हों को सदैव ताज़ा रखेंगे।



रंजना लांबा

(प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका- हिंदी)



हिमालय की तराई में बसा ये शहर

सुंदरता का आभास बिखेरता
जहाँ देखो फूलों से भरी क्यारियां
फलों से लदे पेड़
दूर तक फैले हुए बागान ही बागान
ली कार्बुजिए के नक्शे में समाया शहर
सड़कें, घर, बाजार,
सब एक से
एक ही कलाकार
के साँचे में गढ़े हुए से।
हाँ कह सकती हूँ कि
थोड़ा सुकून सा तो है यहाँ पसरा पड़ा
हर एक बात में ठहराव सा है।
अब तक बड़े भागमभाग की ज़िन्दगी जी है
तो ये ठहराव सा अच्छा तो है
पर क्या कहूँ
अपनी आदत का
वो जो मुझे सुकून से बैठने नहीं देती।
सड़कें खाली - खाली सी
जैसे कोरोना काल में दिल्ली थी
ट्रैफिक नियम बड़ी शिद्दत से जीते हैं लोग यहाँ।
रिहायसी इलाकों से गुज़रते कई बार मन में सवाल आया
यह भारत ही है या विदेश
इतनी शान्ति इतना सन्नाटा
इतने कम लोग
क्या सारी भीड़ कहीं चली गई है?
या यह सब भ्रम हैं
गाड़ी चलाते हुए कई बार कोफ़्त तो कई बार आलस महसूस होता है
सामने ग्रीन सिग्नल है
और आप साठ के ऊपर गाड़ी नहीं चला सकते।
आँखों के सामने वह हरी लाइट लाल हो जाती है।
और आप मन मसोस कर रह जाते है
कुछ किसकिसाहट होती तो जरूर है
पर ठीक है
कोई मारममार नहीं है किसी को कोई जल्दी नहीं पड़ी
सब धीरे- धीरे खिसक रहे है सड़क पर
लोग भी आरामपसंद तबियत रखते हैं
कोई हॉर्न भी बेवजह नहीं बजाता।
मैं तो दिल्ली की सड़कों की आदी हूँ।
मजाल थी जो कोई हॉर्न बजा कर आगे निकल जाए।
दिल्ली की सड़कें और हॉर्न का शोर
बस ट्रैफिक ही ट्रैफिक
एक दूसरे को पछाड़ आगे निकलने की होड़।
यहां मौसम भी अच्छा सा ही है
अप्रैल का आखिरी सप्ताह
पर अभी भी गर्मी नहीं है।
कुछ गुनगुनाहट सी है बस
जो सुहावनी जान पड़ती है
तो मन को कुछ -कुछ लुभाने लगा है यह शहर।

ममता पाल , स्नातकोत्तर इतिहास



आलेख : स्वर्ण मंदिर की यात्रा



पिछले वर्ष नवंबर, 2024 के महीने में मुझे अपने मम्मी - पापा और बड़े भाई के साथ स्वर्ण मंदिर, अमृतसर जाने का मौका मिला। मैं बहुत ही खुश था कि मुझे स्वर्ण मंदिर जाने का मौका मिल रहा है और वो भी ट्रेन से। मुझे ट्रेन से यात्रा करना बहुत ही अच्छा लगता है क्योंकि मुझे बस में यात्रा करने से बहुत ही ज्यादा उल्टी होती है, बस से सफर करना है, इतना सोचने भर से ही उल्टी होने लगती है। मेरी खुशी का एक और कारण यह भी था कि हमारे साथ मेरी मौसी जो कि गाजियाबाद में रहती हैं वो भी स्वर्ण मंदिर दर्शन करने के लिए हमारे साथ आ रही थी।

हम लोग 23 नवंबर, 2024 को प्रातः काल में ही मोहाली रेलवे स्टेशन से ट्रेन में बैठे और 11 बजे अमृतसर आ गए। अमृतसर में हम लोग गुरु अंगद देव सराय में रुके और हमने उसी दिन स्वर्ण मंदिर में माथा टेका। मैंने वहाँ पर बहुत बड़ा तालाब देखा जिसके अंदर बहुत सारी रंग - बिरंगी मछलियाँ थी, मैंने वहाँ पर म्यूज़ियम भी देखा जिसमें हमें सिक्ख धर्म के वीरों के बारे में जानने का मौका मिला। मैं बहुत ही खुश था। उसके बाद हमने गुरु के लंगर में प्रसाद ग्रहण किया, मुझे प्रसाद बहुत ही अच्छा लगा। हम लोग जलियाँवाला बाग भी गए और अतीत में वहाँ पर जो भी हुआ था उससे मुझे बहुत दुख हुआ। उसके बाद हम एक और गुरुद्वारे में माथा टेकने के लिए गए तो हमने अपने जूते बाहर ही रख दिये और हम दर्शन करने के लिए अंदर चले गए। जब दर्शन करने के बाद हम लोग वापस आए तो मेरे, मम्मी और मौसी के जूते चोर लेकर चला गया था, केवल पापा और बड़े भाई के जूते लेकर नहीं गया। इससे मैं काफी दुखी हो गया था, लेकिन थोड़ी देर के बाद पापा ने मुझे, मम्मी को और मौसी को नए जूते लाकर दे दिये, नए जूते पाकर मैं एक बार फिर बहुत खुश हो गया। इससे हमें एक सबक यह मिला कि जब भी किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करें तो जूते - चप्पलों को जूता घर में ही रखें उन्हें खुले में बाहर न रखें।

अगले दिन हम लोग बाघा बार्डर भी गए और वहाँ पर देशभक्ति के गीतों पर खूब नाचे और परेड को भी देखा। इसके बाद हम लोग वापस अमृतसर आ गए और अगले दिन ट्रेन से चंडीगढ़ वापस आ गए। अभी भी यह यात्रा मुझे बहुत ही रोमांचित करती है और यदि मुझे सोना मंदिर (मैं स्वर्ण मंदिर को सोना मंदिर कहता था) दोबारा जाने का मौका मिलेगा तो मैं जरूर जाना चाहूँगा।

सुर्यासु सिंह (Suryanshu Singh)

कक्षा - प्रथम ख



टीचर

रोज क्लास में आती टीचर
फिर हाज़िरी लगाती टीचर
दिन भर हमे पढ़ाती टीचर
थककर खेल खिलाती टीचर
कविता और कहानी अक्सर
हमको बैठ सुनाती टीचर

आदित्या

प्रथम क



मेरी प्यारी अध्यापिका
घर छोड़कर शुरू - शुरू में
स्कूल चला जब जाता था,
माँ को याद कर - कर के
मैं बहुत आँसू बहाता था,
फिर प्यारी अध्यापिका ने
प्यार से मुझको समझाया,
मैं भी तो माँ जैसी ही हूँ
कह कर मुझको सहलाया,
अपनी प्यारी शिक्षिका को
धन्यवाद चाहता हूँ कहना,
आप हमेशा नन्हे मुन्नों,
संग बस ऐसे ही रहना।

देवांश वालिया



फोन 📞

आज जब हुआ सवेरा,
सब जगह बस मौन था,
इधर- उधर देखा जब मैंने,
तो सबके हाथ में फोन था।
मां बतलाती मुझको,
जब मैं नहीं जानता मैं कौन था,
मेरी पढ़ाई के शुरुवाती समय में,
कोरोना चरम सीमा पर था।
पढ़ाई कहाँ से की जाए,
यही सोच बस तड़पाए,
लेपटॉप नहीं दिला पाए,
क्योंकि गाड़ी का लोन था।
दुविधा बहुत भारी थी,
पढ़ाई रखनी जारी थी,
स्कूल का ऑनलाइन क्लास था,
हमें भी मिल गया फोन था।
जब मां आवाजें लगाती,
तो मैं तो बिल्कुल मौन था,
क्योंकि मेरे हाथ में फोन था।
बच्चे त्यागें फोन सभी अब,
रहेंगे नहीं मौन सभी अब,
पढ़ाई करने स्कूल हम जाएंगे,
यही जागरूकता हम फैलाएंगे।

अक्षज कुमार

कक्षा: ५ (ब)

मेरी आराध्या'

उसकी खामोशी मुझे सज़ा लगती है
वो सामने हो तो दुआ लगती है
माना कि उसे पाना इतना आसां न था
लेकिन वो न मिल पाए ऐसा भी सोचा न था
फिर उसके आने से मानो
नई ज़िंदगी मिल गई
मेरे सूने आँगन में
इक नन्ही कली खिल गई
उसकी गूँजती किलकारियाँ
मेरे जीने का सबब बन गई
फिर न जाने कब उसने रूठना सीख लियाकत
और मैंने मनाना
उसकी निश्छल हंसी से रोशन आज भी
घर का हर इक कोना
इस निष्ठुर संसार में
गम उसको छू भी न पाए
हाथ जोड़ विनती है मालिक
हर मनचाहा सुख वो पाए
जिसकी सलामती की खातिर
हर दर पर है शीश झुकाया
मेरा जुनून, मेरी छाया
वह मेरी 'आराध्या'।।



रंजना लाम्बा (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका- हिंदी)



संसार के आठ सत्य

- जन्म निश्चित है – इस संसार में हर प्राणी का जन्म होना निश्चित है।
- मृत्यु अटल है – जो जन्मा है, उसका अंत निश्चित है।
- परिवर्तन शाश्वत है – संसार में कुछ भी स्थायी नहीं, सब बदलता रहता है।
- कर्म का फल निश्चित है – हर कार्य का परिणाम अवश्य मिलता है।
- समय मूल्यवान है – समय किसी के लिए नहीं रुकता ।
- सुख-दुःख अस्थायी हैं – सुख और दुःख दोनों ही क्षणभंगुर हैं।
- ज्ञान ही प्रकाश है – अज्ञान से दुःख और ज्ञान से जीवन में उजाला आता है।
- सत्य और धर्म ही आधार हैं – सच्चाई और धर्म ही जीवन का असली बल हैं।
- ये आठ सत्य जीवन को सही दिशा देने वाले दीपक की तरह हैं।

नेहा

नौवीं- ग

विज्ञापन : एक सशक्त माध्यम

विज्ञापन हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो वस्तुओं और सेवाओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह उपभोक्ता और उत्पादक के बीच सेतु का कार्य करता है। आकर्षक चित्र, शब्द और ध्वनियों के माध्यम से विज्ञापन लोगों का ध्यान खींचता है और उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित करता है।

आधुनिक युग में विज्ञापन केवल व्यापारिक लाभ का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक संदेश देने का भी माध्यम बन गया है। टी.वी., रेडियो, अखबार और इंटरनेट जैसे विभिन्न माध्यमों से विज्ञापन दूर-दूर तक पहुंचते हैं। यह समाज को नई सोच देता है, बाजार को गतिशील बनाता है और आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देता है।

सृजन प्रामाणिक

नौवीं- ग

स्वच्छता : स्वस्थ जीवन की आधारशिला

स्वच्छता हमारे स्वास्थ्य और जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल शरीर को रोगमुक्त रखती है, बल्कि हमारे वातावरण को भी सुंदर और स्वच्छ बनाती है। व्यक्तिगत स्वच्छता जैसे हाथ धोना, नहाना और दांत साफ रखना अनिवार्य हैं। घर, स्कूल और आस-पड़ोस की सफाई भी समान रूप से महत्वपूर्ण है।

गंदगी रोगों को बढ़ावा देती है, इसलिए हमें कचरा न फैलाने और साफ-सफाई रखने की आदत डालनी चाहिए। स्वच्छ वातावरण में जीवन स्वस्थ और सुखमय होता है। स्वच्छता अपनाएँ और स्वास्थ्य तथा सौंदर्य दोनों को बनाए रखें।

नव्या

छठी - क

प्रसिद्ध हस्तियों के प्रेरणादायक नारे और उद्धरण



*** महात्मा गांधी**

1. "सत्य ही परम शक्ति है।"
2. "आप स्वयं वह बदलाव बनिए, जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।"

*** नेल्सन मंडेला**



3. "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिससे आप दुनिया को बदल सकते हैं।"
4. "यह हमेशा संभव है कि आप जीतें, जब तक आप प्रयास करना नहीं छोड़ते।"
5. "मैं असफलता नहीं मानता; मैं केवल परिणामों के साथ अनुभव मानता हूँ।"



*** स्वामी विवेकानंद**

6. "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।"
7. "सफलता पाने के लिए मेहनत और धैर्य सबसे बड़ा हथियार हैं।"



*** अब्राहम लिंकन**

8. "आप जो सोचते हैं, वही बन जाते हैं।"
9. "जो चीज़ आपको नीचे गिराती है, वही आपको मजबूत बनाती है।"
10. "असफलता से मत डरिए; डर असफल होने का नहीं बल्कि प्रयास न करने का है।"



*** अब्दुल कलाम**

11. "सपने वे नहीं जो हम सोते समय देखते हैं, सपने वे हैं जो हमें सोने नहीं देते।"
12. "अगर आप कठिनाई में भी मुस्कुराते हैं, सफलता आपके कदम चूमेगी।"
13. "कभी हार मत मानो; आज कठिन है, कल और कठिन है, लेकिन परसों सूर्य चमकेगा।"



*** विंस्टन चर्चिल**

14. "सफलता अंतिम नहीं है, असफलता घातक नहीं है: साहस जारी रखना मायने रखता है।"
- 15 "सिर्फ वही व्यक्ति जीतता है जो लगातार प्रयास करता है।"



*** हेलेन केलर**

16. "जीवन या तो साहसिक होता है या कुछ नहीं।"
17. "अंधकार के बाद ही प्रकाश दिखाई देता है।"

अर्शनीत कौर
नौवीं - ख

हमारे प्राचार्य : ज्ञान ज्योति के वाहक

हमारा विद्यालय ज्ञान व मार्गदर्शन का केंद्र है और इस विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक हैं हमारे प्राचार्य महोदय श्री वीरेन्द्र सिंह जी हैं। उनका व्यक्तित्व अनुशासन, सरलता, विद्या और नेतृत्व का अद्भुत उदाहरण है। वे हमें केवल शिक्षा ही नहीं देते बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं।

"ज्ञान ज्योति के वाहक हैं
सदाचार के प्रवाहक हैं।
मुस्कान से मन जीत लें
शिक्षा-दान के रक्षक हैं।"

उनकी दूरदर्शिता और प्रेरणादायक मार्गदर्शन से हमारा विद्यालय निरंतर नई ऊँचाइयों को छू रहा है। उनके नेतृत्व में विद्यालय केवल पढ़ाई का केंद्र नहीं बल्कि संस्कार और चरित्र निर्माण का उत्तम स्थल बन चुका है।

आज हम सब गर्व से कह सकते हैं कि प्राचार्य महोदय हमारे लिए केवल गुरु ही नहीं, बल्कि प्रेरणा के दीपस्तंभ हैं।

अवनि
नौवीं- ग

मेहनत से बदलता भाग्य

हमारी जीवन यात्रा में भाग्य और मेहनत दोनों का महत्व होता है। कभी-कभी लोग केवल भाग्य की ताकत पर विश्वास करते हैं और मेहनत से बचते हैं लेकिन सच्चाई यह है कि भाग्य केवल उस व्यक्ति के साथ होता है जो लगातार मेहनत करता है।

मेहनत से व्यक्ति अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है। इतिहास में कई ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने कठिन परिश्रम से अपने भाग्य को बदल कर सफलता प्राप्त की। चाहे वह विद्यार्थी हो, किसान हो या वैज्ञानिक, सभी ने मेहनत की शक्ति को अपनाया और अपने जीवन को नई दिशा दी।

मेहनत का मतलब सिर्फ शारीरिक प्रयास नहीं है बल्कि मानसिक दृढ़ता और सही योजना बनाना भी है। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होता है, वह किसी भी कठिनाई को पार कर सकता है। भाग्य सिर्फ इंतज़ार करने से नहीं बदलता, बल्कि मेहनत करने से बदलता है।

अतः हमें हमेशा यह समझना चाहिए कि भाग्य हमारे प्रयासों का परिणाम है। लगातार मेहनत और आत्मविश्वास से हम अपने जीवन की दिशा बदल सकते हैं और सफलता पा सकते हैं।

भाग्य परिवर्तनशील है, लेकिन मेहनत स्थायी है। जो व्यक्ति अपने प्रयासों में निरंतर रहता है, वह किसी भी परिस्थिति में सफलता प्राप्त कर सकता है। इसलिए मेहनत को अपनाइए और अपने भाग्य को स्वयं संवारिए।

समर्थ पराशर

आठवीं- क

‘भारतीयों में चाय का चस्का’

भारत में चाय केवल एक पेय नहीं, बल्कि जीवन का हिस्सा है। सुबह उठते ही अधिकांश लोग कहते हैं – “पहले चाय, फिर काम।” बिना चाय के तो दिन की शुरुआत अधूरी-सी लगती है। गाँव हो या शहर, अमीर हो या गरीब, दफ्तर का कर्मचारी हो या खेत में काम करने वाला किसान – चाय सबको जोड़ती है। यही कारण है कि भारत में नुक्कड़ की चाय की दुकान सबसे ज़्यादा चहल-पहल वाली जगह मानी जाती है। वहाँ लोग राजनीति, खेल, समाज, परिवार, यहाँ तक कि भविष्य की योजनाओं पर भी चर्चा करते हैं। चाय का प्याला जैसे विचारों को बाँटने का एक साधन बन गया है।

चाय केवल स्वाद के लिए ही नहीं पी जाती, बल्कि यह मन की थकान मिटाने और रिश्तों में अपनापन घोलने का काम भी करती है। कई लोग तो दिन में पाँच-छह बार चाय पीते हैं और कहते हैं – “चाय न मिले तो सिर दर्द होने लगता है।” यही है भारत के लोगों का चाय के प्रति गहरा चस्का।

अतः भारत में चाय केवल एक आदत नहीं, बल्कि संस्कृति है जो लोगों को आपस में जोड़ती है।

रोशनी

दसवीं- ग

सच्चे मित्र की पहचान

मित्रता जीवन का सबसे अनमोल रिश्ता है। बहुत से लोग हमारे जीवन में आते-जाते रहते हैं, परंतु सच्चा मित्र वही होता है जो हर परिस्थिति में हमारे साथ खड़ा रहता है।

सच्चे मित्र की पहचान कठिन समय में होती है। जब सब साथ छोड़ देते हैं, तब वही मित्र हमारी ढाल बनकर खड़ा होता है। वह न केवल खुशियों में भागीदार होता है, बल्कि दुःख बाँटकर उसे हल्का भी करता है।

सच्चा मित्र कभी स्वार्थी नहीं होता, वह हमारी गलतियों पर पर्दा डालने के बजाय हमें सही रास्ता दिखाता है। उसकी सलाह हमें भटकने से रोकती है और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

मित्रता में धन, रूप या पद का कोई महत्व नहीं होता। जीवन में अगर एक भी सच्चा मित्र मिल जाए तो वह हजारों परिचितों से बढ़कर होता है इसलिए सच्चे मित्र की पहचान उसके त्याग, निःस्वार्थ प्रेम और कठिन समय में साथ निभाने से होती है। हमें ऐसे मित्र का सम्मान करना चाहिए और स्वयं भी ऐसा मित्र बनने का प्रयास करना चाहिए।

समरवीर सोनी

छठी क

समाप्त होती पड़ोस कल्चर '

भारतीय समाज की एक बड़ी पहचान रही है - पड़ोस संस्कृति। पहले लोग अपने पड़ोसियों को परिवार का हिस्सा मानते थे। सुख-दुःख, त्योहार और आपात स्थिति - हर मौके पर पड़ोसी सबसे पहले मदद को खड़े होते थे। बच्चों का लालन-पालन भी सामूहिक रूप से होता था।

लेकिन समय के साथ यह संस्कृति धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। आधुनिक जीवन, व्यस्तता, नौकरी की भागदौड़ आदि ने आपसी मेल-जोल को बहुत कम कर दिया है। अब लोग बगल वाले पड़ोसी का नाम तक नहीं जानते। जहाँ पहले आँगन में मिल-बैठकर बातें होती थीं, वहीं अब दरवाज़े बंद रहते हैं। इस बदलते माहौल में मानवीय रिश्तों की अहमियत घट रही है। यह स्थिति चिंता का विषय है, क्योंकि पड़ोस संस्कृति समाज को मजबूती और सुरक्षा प्रदान करती थी।

समाज को जीवंत और सुरक्षित बनाए रखने के लिए हमें पड़ोस संस्कृति को पुनर्जीवित करना होगा। आपसी सहयोग, संवाद और अपनापन ही जीवन को सच्चे अर्थों में सुखद बनाता है।

दिव्यांश ग्यारहवीं-क

'मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना '

मनुष्य के जीवन में अनेक घटनाएँ घटती हैं, परंतु कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जिन्हें हम जीवनभर नहीं भूल पाते। मेरे जीवन की भी एक ऐसी ही अविस्मरणीय घटना है।

यह घटना उस समय की है जब मैं पहली बार स्कूल में मंच पर भाषण देने गयी। पूरे विद्यालय के सामने खड़ा होना मेरे लिए बहुत कठिन था। दिल जोर-जोर से धड़क रहा था और हाथ काँप रहे थे। परंतु जैसे ही मैंने बोलना शुरू किया, धीरे-धीरे आत्मविश्वास बढ़ता गया। जब भाषण पूरा हुआ तो सभी ने तालियाँ बजाकर मेरा उत्साह बढ़ाया।

वह क्षण मेरे लिए बहुत ही खास था। उस दिन मैंने सीखा कि आत्मविश्वास से बड़ी-बड़ी कठिनाइयों को भी पार किया जा सकता है। यह अनुभव मेरे जीवन की सबसे यादगार और अविस्मरणीय घटना बन गया।

जीवन की अविस्मरणीय घटनाएँ हमें प्रेरणा देती हैं और आगे बढ़ने का साहस भी।

अनवी

छठी क

“योग भगाए रोग” विषय पर दो मित्रों के बीच संवाद

समीर : नमस्ते, रजत ! तुम कुछ परेशान लग रहे हो, क्या हुआ?

रजत : हाँ, मित्र। मैं अक्सर थकान और पेट की समस्या से परेशान रहता हूँ। डॉक्टर भी कहते हैं कि जीवन शैली बदलो।

समीर : तुमने योग अपनाया है क्या? योग से शरीर मजबूत होता है और रोग दूर रहते हैं।

रजत : सच में? कैसे?

समीर : योग के आसन, प्राणायाम और ध्यान से न केवल शारीरिक रोग कम होते हैं, बल्कि मानसिक तनाव भी दूर होता है। नियमित अभ्यास से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

रजत : वाह! तो योग अपनाकर मैं अपने स्वास्थ्य को सुधार सकता हूँ।

समीर : बिल्कुल! योग रोग भगाता है और जीवन में ऊर्जा और शांति लाता है।

यशिका
दसवीं

माता-पिता की महिमा

माता-पिता हमारे जीवन के प्रथम गुरु और सबसे बड़े संरक्षक हैं। उनका प्रेम और त्याग शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। माता वह स्नेह और ममता की मूर्ति है, जो हमें जन्म से लेकर जीवन के हर मोड़ पर संबल देती है। पिता वह आधार हैं, जिनकी मेहनत और संघर्ष से हमारा जीवन सुरक्षित और सहज बनता है। माता-पिता ही हमें सही मार्ग दिखाते हैं, अच्छे-बुरे का ज्ञान कराते हैं और जीवन में सफल बनने के लिए प्रेरित करते हैं। भारतीय संस्कृति में माता-पिता का स्थान देवताओं से भी ऊपर माना गया है। प्राचीन शास्त्रों में कहा गया है:

"माता पिता गुरु प्रायः, त्रिदेव सम माने।

जिनके चरणों में वसते, सुख-शांति के ठिकाने ॥"

अर्थात् माता-पिता और गुरु त्रिदेव के समान पूजनीय हैं क्योंकि उनके चरणों में ही सुख और शांति का निवास है। माता अपने बच्चों को निःस्वार्थ प्रेम देती है। उसकी ममता दुनिया का सबसे बड़ा खजाना है। पिता अपने परिवार की खुशी और भविष्य के लिए कठिन परिश्रम करता है। माता-पिता का स्नेह हमें हर कठिनाई से लड़ने का साहस देता है। कवि की पंक्तियों में माता-पिता का प्रेम यूँ व्यक्त होता है:

"माँ की ममता छाँव सी, ठंडी-ठंडी शीतल

पिता की मेहनत धूप सी, पर जीवन कर दे उज्ज्वल।"

माता-पिता हमारे जीवन की नींव हैं। उनके संस्कार और शिक्षा हमें नैतिक मूल्यों से जोड़ते हैं। जो संतान माता-पिता का सम्मान करती है, उसका जीवन सुखी और सफल होता है। हमें सदैव उनका आदर करना चाहिए, उनके चरणों को अपना तीर्थ मानना चाहिए। उनका सम्मान कर ही हम सच्चे अर्थों में अच्छे इंसान बन सकते हैं।

तनिष्क
नौवीं- क

संतोष धन

मनुष्य के जीवन में संतोष सबसे बड़ा धन है। धन, और प्रतिष्ठा पाने की लालसा कभी समाप्त नहीं होती, लेकिन संतोष प्राप्त कर लेने वाला व्यक्ति सदा सुखी रहता है।

संतोषी मनुष्य को छोटी-सी उपलब्धि भी बड़ी खुशी देती है, जबकि असंतोषी व्यक्ति लाखों पाकर भी अधूरा ही महसूस करता है। लोभ और ईर्ष्या से मन अशांत हो जाता है, परंतु संतोष मन को शांति और जीवन को स्थिरता देता है। संतोष हमें सिखाता है कि जो कुछ हमारे पास है, उसी में प्रसन्न रहें और उसी का श्रेष्ठ उपयोग करें। यही भाव हमें सच्चे सुख और जीवन की पूर्णता की ओर ले जाता है।

“संतोष ही सबसे बड़ा धन है।”

धन-दौलत क्षणिक है, परंतु संतोष से प्राप्त आनंद जीवन भर साथ रहता है।

प्रियंका बिष्ट , ग्यारहवीं

शिक्षक : हमारे जीवन का आधार

शिक्षक का स्थान हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण और आदरणीय है। शिक्षक वह दीपक है, जो स्वयं जलकर हमारे जीवन को रोशन करता है। वह न केवल हमें पुस्तकीय ज्ञान देता है बल्कि हमें सही और गलत का अंतर समझाता है, अच्छे संस्कार सिखाता है और हमें एक योग्य नागरिक बनाने में सहायता करता है। शिक्षक ही वह शक्ति है, जो विद्यार्थी के मन को आकार देती है और उसे जीवन में सफलता के शिखर तक पहुँचने का मार्ग दिखाती है।

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सदैव सर्वोच्च माना गया है। प्राचीन काल में भी गुरु को माता-पिता से भी अधिक सम्मान दिया गया। जैसा कि श्लोक में कहा गया है:

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बताय॥"

इस दोहे का अर्थ है कि यदि गुरु और भगवान दोनों सामने खड़े हों तो पहले गुरु को प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि गुरु ही हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग बताते हैं।

शिक्षक का योगदान केवल विद्यालय तक सीमित नहीं होता, वह जीवन भर हमारा मार्गदर्शन करता है। एक अच्छा शिक्षक हमें केवल पढ़ाई ही नहीं सिखाता, बल्कि जीवन जीने का तरीका भी सिखाता है। वह हमारे व्यक्तित्व में आत्मविश्वास, ईमानदारी और नेतृत्व क्षमता का विकास करता है। समाज का निर्माण शिक्षकों के हाथों से होता है, क्योंकि वही नई पीढ़ी को संस्कार और ज्ञान देकर राष्ट्र का भविष्य गढ़ते हैं।

शिक्षक का महत्व कवि की इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है:

"दीपक की लौ सा जलकर, शिक्षक प्रकाश फैलाता है,
अज्ञान के अंधकार में, ज्ञान का दीपक लहराता है।"

एक सच्चा शिक्षक हर विद्यार्थी के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानता है और उसे निखारने में मदद करता है। शिक्षक का आशीर्वाद और प्रेरणा हमें जीवनभर आगे बढ़ने की ऊर्जा देती है। अतः शिक्षक को हमारे जीवन का सच्चा मार्गदर्शक और आधार माना जाता है।

आराध्य
दसवीं- क

कहानी- दोस्ती और धोखा

एक गाँव में दो मित्र रहते थे – अर्जुन और मोहन। दोनों बचपन से साथ पढ़ते, खेलते और हर काम में एक-दूसरे का सहारा बनते थे।

एक दिन अर्जुन को एक व्यापार करने का अवसर मिला। उसने सोचा – “मोहन मेरा सच्चा मित्र है, क्यों न इसे भी साथ ले लिया जाए।”

दोनों ने मिलकर मेहनत शुरू की, व्यापार अच्छा चलने लगा और धीरे-धीरे अर्जुन ने मोहन पर पूरी तरह भरोसा कर लिया।

लेकिन समय बीतते ही मोहन के मन में लालच बढ़ गया। उसने अर्जुन के पैसों में गुपचुप हिस्सा काटना शुरू कर दिया। एक दिन जब अर्जुन को सच्चाई पता चली, तो उसका दिल टूट गया। उसने मोहन से कहा –

“तुमसे धोखा मिलने की उम्मीद मुझे कभी नहीं थी। धन खोने का दुःख इतना नहीं, जितना अपने मित्र पर से विश्वास खोने का है।”

मोहन को अपनी गलती का एहसास हुआ, पर तब तक देर हो चुकी थी। अर्जुन ने व्यापार तो बचा लिया, पर दोस्ती हमेशा के लिए खो बैठा।

शिक्षा-

धोखे से भले कुछ समय का लाभ मिल जाए, लेकिन विश्वास खोने पर जीवनभर का नुकसान उठाना पड़ता है। सच्चा लाभ हमेशा ईमानदारी और विश्वास से ही मिलता है।

गतिक

8वीं 'क'

कहानी - मूर्ख डब्बू

एक समय की बात है एक गाँव में एक डब्बू नामक व्यक्ति रहता था। वह मूर्ख था। वह बेरोजगार था इसलिए नौकरी की तलाश में शहर गया पर उसे नौकरी नहीं मिली। एक दिन एक दुकानदार ने उसे अपनी दुकान पर सामान बेचने के बदले सौ रूपये देने की बात कही, वह मान गया। वह मूर्खों वाली हरकतें करता रहा। वहाँ से गुजर रहे एक आदमी ने सोचा कि क्यों न इसे ठगा जाए तो दुकान में जाकर उसने कहा-

आदमी- मुझे दो किलो आलू दे दो।

डब्बू- ये लीजिए।

आदमी- नहीं, नहीं। मुझे आलू नहीं प्याज दो।

डब्बू- (गुस्से से) ये लो।

आदमी- नहीं, तुम ऐसा करो मुझे दो साबुन दे दो।

डब्बू- ठीक है ये लो।

आदमी- अच्छा, चलता हूँ।

डब्बू- भाई साहब, पैसे तो दो।

आदमी- किस चीज के पैसे? साबुन तो मैंने प्याज के बदले में लिया।

डब्बू- तो प्याज के पैसे दो।

आदमी- प्याज तो आलू के बदले लिए थे।

डब्बू- तो आलू के पैसे दो।

आदमी- जब मैंने प्याज और आलू लिया ही नहीं तो पैसे क्यों दूँ।

डब्बू सोचने लगा।

आदमी वहाँ से जा चुका था। तब उसे पता चला कि उसे ठगा गया है। उसके मालिक ने उसे बाहर निकाल दिया और कहा पचास रूपये लो और वापस जाओ। वह हमेशा के लिए वापस गाँव चला गया।

सीख- हमें मूर्ख नहीं बुद्धिमान बनना चाहिए।

सहजप्रीत

आठवीं ख

जीवन में परिश्रम का महत्व

श्रम का अर्थ है- मेहनत।

श्रम ही मनुष्य जीवन की गाड़ी को खींचता है। चींटी से लेकर हाथी तक सभी जीव बिना श्रम के जीवित नहीं रह सकते। फिर मनुष्य तो अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ है। संसार की उन्नति- प्रगति मनुष्य के श्रम पर निर्भर करती है। श्रम करने की आदत बचपन से ही डाली जाए तो अच्छा है। परिश्रमी जन मिट्टी से सोना बना लेते हैं।

जो व्यक्ति आलस्य का जीवन बिताते हैं, वे कभी उन्नति नहीं कर सकते। आलस्य जीवन को अभिशापमय बना देता है। कुछ लोग श्रम की अपेक्षा भाग्य को महत्त्व देते हैं लेकिन आलसी बनकर बैठे रहना और असफलता के लिए भाग्य को कोसना किसी भी प्रकार उचित नहीं। परिश्रम के बल पर मनुष्य भाग्य की रेखाओं को भी बदल सकता है।

परिश्रमी व्यक्ति स्वावलंबी, ईमानदार, चरित्रवान और सेवाभाव से युक्त होता है। अतः मनुष्य को परिश्रम करने की प्रवृत्ति विद्यार्थी जीवन में ग्रहण करनी चाहिए।

लक्ष्य

नौवीं क



कहानी का नाम: "एक पेंसिल की ताकत"

एक स्कूल में राज नाम का एक लड़का पढ़ता था। वह होशियार तो था, लेकिन हमेशा खुद को दूसरों से कम समझता था। वह सोचता, "मेरे पास अच्छे कपड़े नहीं हैं, न अच्छे जूते, और न ही ट्यूशन... मैं कैसे आगे बढ़ सकता हूँ?"

एक दिन कक्षा में अध्यापक आए और सभी विद्यार्थियों को एक-एक पेंसिल दी। उन्होंने कहा, "आज हम इससे कुछ लिखने की बजाय, एक सीख लेंगे।"

अध्यापक बोले:

"पेंसिल हमें पाँच बातें सिखाती है –

1. भीतर का ग्रेफाइट ही असली ताकत है, बाहर की लकड़ी नहीं। उसी तरह, आपका चरित्र और ज्ञान सबसे जरूरी हैं।
2. जब पेंसिल को तेज किया जाता है, तो वह बेहतर लिखती है। उसी तरह, मुसीबतें हमें मजबूत बनाती हैं।
3. अगर हम गलती करें तो पेंसिल के पास रबड़ होती है। हर गलती सुधारी जा सकती है, बशर्ते हम सीखने को तैयार हों।
4. पेंसिल तब तक काम करती है, जब तक वह खुद को खर्च करती है। हमें भी दूसरों की सेवा में लगकर अपना जीवन सार्थक बनाना चाहिए।
5. पेंसिल चुपचाप काम करती है, शोर नहीं मचाती। सच्चा काम करने वाला हमेशा विनम्र होता है।"

राज ये बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने सोचा,

"अगर एक पेंसिल इतनी कुछ सिखा सकती है तो मैं क्यों नहीं? मेरे पास भी मेहनत करने की ताकत है!"

उस दिन से राज ने खुद पर भरोसा करना शुरू किया। वह बिना शिकायत के पढ़ाई करता, नियमित समय पर स्कूल आता और हर दिन कुछ नया सीखने की कोशिश करता। कुछ सालों में वह स्कूल का टॉपर बन गया और आगे चलकर एक वैज्ञानिक बना।

सीख:

हम सबके अंदर शक्ति है, बस हमें खुद पर भरोसा करना चाहिए। साधन नहीं, सोच बड़ी होनी चाहिए।

लेखिका- अनन्या

आठवीं- क



'मेरे सपनों की किताब'

हजारों किताबें हैं इस दुनिया में

पर मेरे सपनों जैसी क्यों नहीं
और होती तो वह कैसी होती
वह इस दुनिया की होती या नहीं

अगर होती तो क्या मैं उसे पढ़ पाती?

और अगर पढ़ पाती तो उसमें क्या होता?

परियों की कहानी और
खज़ाने की खोज

या कुछ ऐसा होता जो सब से
अलग होता

कुछ ऐसा होता क्या?

या उसमें कुछ और होता?

नव्या

नवीं 'स'



क्या लिखूँ

विद्यालय पत्रिका छप रही है

मिला मुझे समाचार

कविता लिखने के लिए

मैं हूँ बेकरार।

कहानी लिखूँ, कविता लिखूँ या

लिखूँ कोई लेख कुछ समझ नहीं आ रहा

मैं तो रही सर घुटनों पर टेक

लिखूँ कोई रानी की कहानी

या लिखूँ महान व्यक्ति की कहानी

लिखूँ प्रकृति पर कोई कविता

कुछ समझ नहीं आता

आगे पीछे से शब्दों को कतार में

लगा कर अब मैंने मनमानी कर डाली

अपनी कविता रच डाली।

एंजल

नवीं 'स'



दादी माँ

दादी माँ, दादी माँ

मेरी प्यारी दादी माँ

परियों की कहानी सुनाती है

मीठी वाणी बोलना सिखाती है।

मम्मी की डाँट से बचाती है
अपने आँचल में छिपाती है।

मेहनत करना सिखाती है

मेरी प्यारी दादी माँ।

केशव

छठी 'क'



- * ऐसी कौन से कली है जो कभी खिलती ही नहीं ?
- * ऐसा कौन सा गेट है जिसमें हम जा नहीं सकते ?
- * गुलाबी पसीना किस जानवर से निकलता है ?
- * ऐसी कौन सी चीज है जो पढ़ने और लिखने में भी काम आती है पर वह पैन या कागज़ नहीं है।
- * एक पिता ने अपनी बेटी को गिफ्ट देते हुए कहा इसमें ऐसी चीज है जिसे जब प्यास लगे तो पी लेना, भूख लगे तो खा लेना, ठण्ड लगे तो जला लेना ।

बताओ वह चीज क्या है ?

उत्तर.....

छिपकली

कोलगेट

दरियाई घोड़ा

चश्मा

नारियल

इशिका

‘ अपने दुखों से नहीं, दूसरों के सुखों से परेशान हैं लोग ’

मनुष्य का स्वभाव बड़ा विचित्र है। अक्सर लोग अपने दुखों से उतने परेशान नहीं होते, जितने दूसरों के सुख देखकर हो जाते हैं। जब कोई पड़ोसी नया घर बनाता है या मित्र अच्छे अंक प्राप्त करता है तो मन में ईर्ष्या जन्म ले लेती है। यह ईर्ष्या ही हमें दुखी बना देती है।

सच्चाई यह है कि हर व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ कठिनाई अवश्य होती है। हमें लगता है कि दूसरों का जीवन पूर्ण है, जबकि उनके पास भी कई अनकहे दुःख होते हैं। यदि हम तुलना करना छोड़ दें और अपने पास जो है उसमें संतोष करें, तो जीवन और भी सरल और सुखमय हो सकता है।

मनुष्य को चाहिए कि वह दूसरों के सुख से ईर्ष्या करने की बजाय अपने जीवन को सकारात्मक दृष्टि से देखे। असली खुशी तुलना में नहीं, बल्कि संतोष और कृतज्ञता में है।

विक्रमारक आदित्य चालिया,
ग्यारहवीं

खेल नहीं तो कुछ नहीं

जीवन में खेलों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। केवल पढ़ाई और काम से जीवन पूरा नहीं होता। खेल न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बढ़ाते हैं बल्कि मानसिक संतुलन, धैर्य और अनुशासन भी सिखाते हैं।

खेल से टीम भावना, नेतृत्व क्षमता और सहनशीलता का विकास होता है। जो व्यक्ति खेलों में सक्रिय रहता है, वह कठिन परिस्थितियों में भी साहस और आत्मविश्वास से निर्णय ले पाता है। इसके अलावा, खेल तनाव कम करने और स्वास्थ्य बनाए रखने का सबसे अच्छा माध्यम है।

यदि जीवन में खेल न हों, तो व्यक्ति सिर्फ किताबों और कागजों तक सीमित रह जाता है। खेल हमारे जीवन में ऊर्जा, उत्साह और जीवन का सही अनुभव लाते हैं। इसलिए कहा गया है – “खेल नहीं तो कुछ नहीं।”

खेल केवल समय बिताने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को सफल और सशक्त बनाने का मार्ग है। हर व्यक्ति को जीवन में खेलों को महत्व देना चाहिए।

स्वास्तिक
आठवीं- क

पुस्तकें

इंसान की सच्ची मित्र होती हैं पुस्तकें
इस जड़ ज़िन्दगी में कलियाँ बोती हैं पुस्तकें
करके अज्ञानता के अन्धकार को दूर
ज़िन्दगी में खुशियाँ लाती हैं पुस्तकें
छोड़ देते हैं साथ सभी आने पर मुश्किलें
आता नहीं पास कोई बँटवाने को मुश्किलें
अगर हो मनुष्य को ज्ञान इन पुस्तकों का
तो हर मुश्किल का मुँह मोड़ देती हैं पुस्तकें
इंसान की सच्ची मित्र होती हैं पुस्तकें
इस जड़ ज़िन्दगी में कलियाँ बोती हैं पुस्तकें
करके अज्ञानता के अन्धकार को दूर
ज़िन्दगी में खुशियाँ संजोती हैं पुस्तकें
छोड़ देते हैं साथ सभी आने पर मुश्किलें
आता नहीं पास कोई बँटवाने को मुश्किलें
अगर हो मनुष्य को ज्ञान इन पुस्तकों का
तो हर मुश्किल का मुँह मोड़ देती हैं पुस्तकें

इडि
नवीं 'स'

"कुछ करके दिखाना है"

कठिनाइयाँ आएँगी — आने दो
मुश्किलें आएँगी — आने दो
तुम गिरोगी, मगर फिर भी नहीं रुकोगी
तुम्हें लड़ना है — खुद के लिए, अपने लिए
तुम्हें गिरकर उठना है
ज़मीन से आसमाँ तक उड़ना है
अगर तुम्हें आगे बढ़ना है, ऊँचा उड़ना है,
तो तुम ऐसी चट्टान बनो
कि तुम्हें देख सब डर जाए
तुम्हें तुम्हारी मंजिल खुद गले लगाए।
तुम्हें खुद से जीतना है
कठिन रास्तों पर चलना है
इस दौड़ में सबसे आगे निकलना है।
तुम्हें कुछ बनना है, कुछ बड़ा करना है
रास्ते में तूफ़ान है — मगर
तुम जैसी यहाँ कोई न कोई चट्टान है।
तुम्हें उन सबको कुछ बताना है
कह कर नहीं कुछ करके दिखाना है।
तुम्हें सूरज जैसा बनना है तो उस जैसा तपना होगा और मेरे
यक्रीन पर खरा उतरना होगा।

वैष्णवी पांडे (दसवीं- ग)

विद्या

विद्या वह ज्योति है जो अँधेरे में भी प्रकाश फैलाती है, विद्या हमारे जीवन में बहुत आवश्यक है। विद्या और परिश्रम ही सफलता के आधार हैं। विद्या हर विद्यार्थी के लिए बहुत जरूरी है। अगर व्यक्ति विद्या ग्रहण करता है तो उसका आत्म-विश्वास बढ़ता है। उचित शिक्षा भविष्य में आगे बढ़ने के लिए कई रास्तों का निर्माण करती है। शिक्षा में सबसे ज्यादा ताकत होती है जिससे पूरी दुनिया को बदला जा सकता है।

अभिजय
छठी 'क'

संस्कृत- विभाग



संस्कृत - विभागः

“भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा”



आचार्यः शारदा नन्द झा
प्रशिक्षित - स्नातक - अध्यापकः (संस्कृतम्)

सम्पादकीयम्.....

“ ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यम् वरदे बुद्धिरूपिणि ।

विद्यालय - पत्रिकारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥”

ई-विद्यालयस्य पत्रिका छात्राणाम् बुद्धि -विकासार्थम् प्रथम सोपानम् अस्ति । यत्र छात्राः स्वानुभवामिव्यक्तिं कुर्वन्ति । एतादृशाः छात्राः भविष्यत्को महान्तो विचारकाः साहित्यकाराः आलोचकाः सामजस्य कर्णधाराश्च भविष्यन्ति ।

संस्कृते पदलालित्यं, संस्कृते चार्थ गौरवम् ।

संस्कृते सकलं ज्ञानं , संस्कृते किं न विद्यते ॥

यः मानवः (जनः) भारतीयानां संस्कृति सम्यक् ज्ञातुम् अभिलषति सः पूर्वं संस्कृत - भाषायाः ज्ञानं कुर्यात् ततः भारतीय - संस्कृतेर्ज्ञानं स्वयमेव भविष्यति । सर्वाषां भाषाणाम् जननी संस्कृत भाषा अस्ति । भारतस्य विकासाय आधार - भूताः बालकाः बालिकाश्च संस्कृतेः उद्धाराय रक्षणाय च संस्कृत - भाषायाः ज्ञानस्य अर्जने तत्पराः सन्ति । पुरा संस्कृत - भाषा लेखन भाषणादि व्यवहारे प्रयुक्ता आसीत् । भगवतां शंकराचार्येण यदा मण्डनमिश्रधाम्नः जिज्ञासायां प्रश्नः कृतस्तदा जलकुम्भवत्या कयाचिद्युवत्योतरं निम्नांकित पद्येन दत्तम् -

स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं कीराङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति ।

द्वारस्थनीडान्तरसन्निरूद्धा जानीहि तन्मण्डनमिश्रधाम्नः

केन्द्रीय - विद्यालय सैक्टरः -47 चण्डीगढम् मध्ये स्थिततस्य बाल - लेखकानां , रचनानां श्रद्धया अध्ययनम् कृत्वा जनाः स्व आनन्द - अनुभूतिं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति । यदि काचित् त्रुटिः स्यात् सा छन्तव्येति विश्वासं कृत्वा एतां रचनां भवतां समक्षं प्रस्तौमि छात्राणाम् पाठकाः आशीर्वचोभिः उत्साहवर्धनम् च करिष्यन्ति ।

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाण भारती ।

तस्याः हि काव्यं मधुरम् तस्मादपि सुभाषितम् ॥

संस्कृत - विभागः विद्यालय - पत्रिका प्रकाशनस्य प्रक्रियाम् प्रचार्यः “ श्री वीरेन्द्र सिंहः” महोदयः अपि स्वीकुर्वाणा धन्यवादाहर्हा इति मन्ये ।

नगरे - नगरे ग्रामे - ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी ,

सदने - सदने जन - जन वदने , जयतु चिरं कल्याणी ।

सत्य - शील सौजन्य समीरा ज्ञानं जला गतिसारा ,

छल - छल कल - कल प्रवहतु दिशि - दिशि पावन संस्कृत धारा ॥

जयतु संस्कृतम्

जयतु भारतम्

“ आचार्य देवो भव ”

शिष्टाचार की बातें (संस्कृत में)

शिष्टाचार

1. सर्वेषां प्रति नम्रता वर्तनीया।
2. गुरुजनानां आदरः करणीयः।
3. सत्यं वद ।
4. स्वच्छता धारणीया।
5. समयपालनं आवश्यकम्।
6. सहपाठीषु स्नेहः भवेत्।
7. परेषां दुःखं न कर्तव्यम्।
8. वृद्धजनानां सेवा कर्तव्या।
9. मधुरं भाषणं करणीयम्।
10. परहितं सदैव चिन्तनीयम्।

नाम : अनवी

कक्षा : षष्ठी अ

अनुक्रमांक : 30

गुरु स्तुति:



गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

अर्थात् - गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है। गुरु ही साक्षात् परब्रह्म है। उन सद्गुरु को प्रणाम है।

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

जो अखण्ड है, सकल ब्रह्माण्ड में समाया है, चर-अचर में तरंगित है। उस (प्रभु) के तत्व रूप को जो मेरे भीतर प्रकट कर मुझे साक्षात् दर्शन करा दे, उन गुरु को मेरा शत् शत् नमन है। अर्थात् वही पूर्ण गुरु है।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

अर्थात् - अज्ञानरूपी अन्धकार से अन्धे हुए जीव की आँखें जिसने ज्ञानरूपी काजल की शलाका से खोली हैं, ऐसे श्री सदगुरु को नमन है, प्रणाम है।

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः।

तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते॥

अर्थात्- धर्म को जाननेवाले, धर्म मुताबिक आचरण करनेवाले, धर्मपरायण, और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करनेवाले गुरु कहे जाते हैं।

नमोस्तु गुरुवे तस्मै, इष्टदेव स्वरूपिणे।

यस्य वाग्मृतम् हन्ति, विषं संसार संज्ञकम्॥

अर्थात्- उन गुरुदेव रूपी इष्टदेव को वन्दन है, जिसकी अमृत वाणी अज्ञानता रूपी विष को नष्ट कर देती है।

निवर्तयत्यन्यजनं प्रमादतः स्वयं च निष्पापपथे प्रवर्तते।

गुणाति तत्त्वं हितमिच्छुरंगिनाम् शिवार्थिनां यः स गुरु र्निगद्यते॥

अर्थात्- जो दूसरों को प्रमाद करने से रोकते हैं, स्वयं निष्पाप मार्ग पर चलते हैं। हित और कल्याण की कामना रखनेवाले को तत्त्वबोध कराते हैं, उन्हें गुरु कहते हैं।

नीचं शय्यासनं चास्य सर्वदा गुरुसंनिधौ।

गुरोस्तु चक्षुर्विषये न यथेष्टासनो भवेत्॥

अर्थात्- गुरु के पास हमेशा उनसे छोटे आसन पे बैठना चाहिए, गुरु आते हुए दिखे, तब अपनी मनमानी से नहीं बैठना चाहिए।

किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्रकोटि शतेन च।

दुर्लभा चित्त विश्रान्तिः विना गुरुकृपां परम्॥

अर्थात्- बहुत कहने से क्या ? करोड़ों शास्त्रों से भी क्या ? चित्त की परम् शांति, गुरु के बिना मिलना दुर्लभ है।

प्रेरकः सूचकश्चैव वाचको दर्शकस्तथा।

शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः॥

अर्थात्- प्रेरणा देनेवाले, सूचन देनेवाले, (सच) बतानेवाले, (रास्ता) दिखानेवाले, शिक्षा देनेवाले, और बोध करानेवाले – ये सब गुरु समान हैं।

गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकार स्तेज उच्यते।

अन्धकार निरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते॥

अर्थात् - 'गु'कार याने अंधकार, और 'रु'कार याने तेज। जो अंधकार का (ज्ञान का प्रकाश देकर) निरोध करता है, वही गुरु कहा जाता है।

शरीरं चैव वाचं च बुद्धिन्द्रिय मनांसि च।

नियम्य प्राञ्जलिः तिष्ठेत् वीक्षमाणो गुरोर्मुखम्॥

अर्थात्- शरीर, वाणी, बुद्धि, इंद्रिय और मन को संयम में रखकर, हाथ जोड़कर गुरु के सन्मुख देखना चाहिए।

नामः दिया सैनी

कक्षा : अष्टमी ब

अनुक्रमांक : 39

माता-पिता-स्तवनम्



माता जननी च सदा करुणामयी,
पिता च रक्षः करुणाकरः सदा।
ययोः प्रसादेन विवृद्धिः प्रजा,
नमामि भक्त्या जननी-जनकौ ॥१॥

माता सुखानां निधिरत्र लोके,
पिता तु धर्मस्य महान् प्रतीकः।
स्नेहप्रवाहेन सुखं प्रयच्छतः,
नमामि भक्त्या जननी-जनकौ ॥२॥

ययोः समीपे शरणं प्रपद्ये,
भयं न विद्येत् कदापि लोके।
तयोः चरणयोः शिरसा नमामि,
दिवं प्राप्येयं तयोः कृपया ॥३॥

न विद्यया न धनसम्पदाऽपि,
तयोः ऋणं शक्यते सम्प्रणेतुम्।
सदा हृदिस्थौ मम जीवितस्य,
प्रदीपवत् ते जननी-जनकौ ॥४॥

नाम : नव्या सिंह

कक्षा : षष्ठी अ

अनुक्रमांक : 33

अनुशासनम्



अनुशासनस्य जीवनमूल्यं असाधारणम् अस्ति। अनुशासनं विना न कश्चन कार्यं सफलं भवति। यथा सैनिकः आदेशं विना युद्धे विजयम् आप्नोतुं न शक्नोति, तथा छात्रः अपि अनुशासनविना ज्ञानं न प्राप्नोति। अनुशासनं केवलं बाह्यनियमपालनं न, अपि तु आन्तरिकसंयमस्य च प्रतीकं भवति।

यदा वयं बाल्ये एव अनुशासनं पालयामः, तदा जीवनस्य सर्वेषु क्षेत्रेषु सफलता स्वयमेव आगच्छति। गृहे अनुशासनं, विद्यालये अनुशासनं, समाजे अनुशासनं च यदि वयं पालयामः, तर्हि अस्माकं चरित्रं निर्मलम्, व्यक्तित्वं आदर्शवत्, भविष्यत् उज्ज्वलम् च भविष्यति।

विद्यालये अनुशासनस्य महत्त्वं विशेषतया दृष्टव्यं। समयपालनं, पाठसावधानता, गुरुशुश्रूषा, नियमपालनं च यदि विद्यार्थीः करोति, तर्हि सः न केवलं उत्तमः छात्रः, अपि तु उत्तमः नागरिकः अपि भवति। अनुशासनरहितः छात्रः न केवलं आत्मनं हानिं करोति, अपि तु अन्यान् अपि विघ्नयति।

समाजस्य सुसंरचना अपि अनुशासनाधीना अस्ति। यदि नागरिकाः नियमपालनं न कुर्युः, तर्हि सर्वत्र अराजकता प्रसरेत्। मार्गं गमनं, व्यवसायः, शासनप्रणाली च—एतेषां सर्वेषां संचालनं अनुशासनविना अशक्यं भवेत्। अतः अनुशासनं सामाजिकजीवनस्य मेरुः इव अस्ति।

प्रकृतिः अपि अनुशासनस्य उत्कृष्टम् आदर्शं ददाति। सूर्योदयः, सूर्यास्तः, चन्द्रस्य कला, ऋतुपरिवर्तनं, नक्षत्रगमनं च—सर्वं निश्चितनियमेन एव भवति। यदि एतेषां नियमः भङ्गः स्यात्, तर्हि विश्वव्यवस्था ध्वंसं प्राप्नुयात्।

इतिहासे अपि वयं पश्यामः यत् यत्र राष्ट्राः अनुशासनं पालयन्ति, तत्र तानि राष्ट्राणि दीर्घकालं स्थिराणि यशस्विनि च भवन्ति। यत्र अनुशासनस्य लोपः जातः, तत्र पतनं, विभाजनं, अवनतिः च अनिवार्या जाता।

अनुशासनस्य स्वरूपं त्रिविधं ज्ञेयम्— आत्मानुशासनं, पारिवारिकं अनुशासनं, सामाजिकं अनुशासनं च। आत्मानुशासनं सर्वातिशयेन श्रेष्ठम् अस्ति। यदि आत्मनियन्त्रणं न स्यात्, तर्हि बाह्यनियमपालनं अपि अशक्यम्।

अतः वयं सर्वे अनुशासनस्य महत्त्वं जीवनस्य प्रत्येकं क्षेत्रे ज्ञात्वा, तस्य नित्यं पालनं कर्तव्यम्। अनुशासनमेव जीवनस्य भूषणम्, राष्ट्रस्य शक्तिः, समाजस्य सौन्दर्यम्, च मानवस्य सफलता च।

अनुशासनं विना न किञ्चन साध्यं, अनुशासनयुक्तं जीवनं नित्यं शोभते।

नाम : अनन्या

कक्षा : अष्टमी अ

अनुक्रमांक : 1

निर्भयता (डर को हराओ)

मा भैः, मा विषीद त्वं,
सदा भव धीरः सदा।
विघ्नाः आगच्छन्ति मर्त्येषु,
न हि तान् मन्यसे यदि।
सिंहः अपि शिकारं विन्दति,
यदा धैर्यं धत्ते दृढं।
अवसरं निहन्ति भयः,
साहसं जनयति जयः।
न हि निर्भयस्य पराजयः,
स जयति स्वकर्मणा।
चल शूर! मा स्म शोचः॥

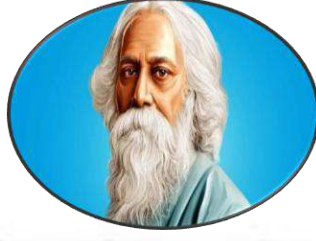


नाम : स्वास्तिक घांघला

कक्षा : अष्टमी अ

अनुक्रमांक: 33

रवीन्द्रनाथ ठाकुरः



रवीन्द्रनाथ ठाकुरः भारतस्य एकः महान् कविः साहित्यकारः चिन्तकः च आसीत् । सः बंगालप्रदेशे कोलकातायां सन् १८६१ तमे वर्षे जन्म प्राप्तवान् । बाल्यकालात् एव सः कवितालेखनम् आरब्धवान् । तस्य पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुरः धर्मिकः पुरुषः आसीत्, माता शारदा देवी च अत्यन्तं स्नेहपूर्णा आसीत् । रवीन्द्रनाथेन 'गीताञ्जलिः' इति सुप्रसिद्धः काव्यग्रन्थः रचितः अस्ति । अस्य काव्यस्य कृते एव सः सन् १९१३ तमे वर्षे नोबेल् पुरस्कारम् अपि प्राप्तवान् । सः प्रथमः भारतीयः आसीत्, यः नोबेल् पुरस्कारम् अलभत् ।

रवीन्द्रनाथेन अनेकानि नाटकानि, उपन्यासाः, गीतानि च लिखितानि । तेन रचितं 'जन-गण-मन' इति गीतं भारतस्य राष्ट्रगीतम् अभवत् । तस्य साहित्ये प्रेम, मानवता, देशभक्ति च प्रकटन्ते । तस्य लेखनशैली सरलाऽपि मनोहरः आसीत् । सः केवलं साहित्यकारः न, अपि तु स्वाधीनतासंग्रामे अपि सक्रियः आसीत् । महात्मा गान्धिनः स्नेहितः आसीत्, तौ उभौ राष्ट्रसेवायाम् अहर्निशम् लग्नौ आस्ताम् ।

सः 'शान्तिनिकेतन' इति विद्यालयम् अपि स्थापयत्, यत्र शिष्याः प्रकृतिसौन्दर्यस्य मध्ये अध्ययनम् अकुर्वन् । रवीन्द्रनाथस्य कृते शिक्षाया महत्त्वम् अतीव आसीत् । तस्य काव्येषु सङ्गीतस्य विशेषः स्थानं आसीत्, अतः तेन 'विश्वकवि' इति उपाधिः अपि लब्धा । तस्य काव्येषु आध्यात्मिकता, प्रकृतिप्रेम च स्पष्टं दृश्यते । जीवनस्य चरमसमयेऽपि सः लेखनं न विरामयत् । सः सन् १९४१ तमे वर्षे दिवंगतः अभवत्, किन्तु तस्य कृतयः अद्यापि सर्वेषां हृदयेषु जीवन्ति ।

रवीन्द्रनाथस्य जीवनम् अस्मान् प्रेरयति यत् न केवलं स्वस्य सुखाय अपि तु जगत्स्य कल्याणाय अपि वयं कर्म कुर्मः । सः भारतीयसाहित्ये अमरः दीपः इव प्रकाशमानः अस्ति । वयं रवीन्द्रनाथस्य आदर्शान् अनुसरित्वा जीवनम् सफलं कर्तुं शक्नुमः इति न संशयः ।

नाम - नयनतिका विश्वास
कक्षा - सातवी ब

संस्कृतभाषायाः संरक्षणे

संस्कृतं भारतस्यात्मा, संस्कृतं भारतस्य ध्वजः।
ज्ञानविज्ञानभाण्डारं, मोक्षमार्गप्रदर्शकम्॥

वेदपुराणशास्त्राणि, संस्कृतेः हृदि संस्थिताः।
काव्यानि गीतनृत्यं च, संस्कृतेः प्रसवादयः॥

किन्तु अधुना संसारः, विस्मरति इमां वणीम्।
विद्यालये दुर्लभा सा, गृहाणां बहिरप्यलम्॥

बालकाः न पठन्त्यद्य, माता न पाठयत्यपि।
यदि एवं चलिष्यति, संस्कृतं लुप्यते ध्रुवम्॥

भाषासु सा प्राचीना, सर्वविद्यानिदानिनी।
तस्याः संरक्षणेनैव, संस्कृतिः स्थास्यति ध्रुवम्॥

उत्तिष्ठ भारतभ्रातृभ्यः, पठाम पठयाम वयम्।
संस्कृतं पुनरुत्थाप्य, कुर्वाम भारतं महत्॥

नाम : ऋषिता सुमन

कक्षा : नवमी ब

विद्यार्थीजीवनविषयक - श्लोकाः

1. विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

भावार्थः विद्या से विनय अर्थात् विवेक व नम्रता मिलती है, विनय से मनुष्य को पात्रता मिलती है यानी पद की योग्यता मिलती है। वहीं, पात्रता व्यक्ति को धन देती है। धन फिर धर्म की ओर व्यक्ति को बढ़ाता और धर्म से सुख मिलता है। इस मतलब यह हुआ कि जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए विद्या ही मूल आधार है।

2. अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं॥

भावार्थः बड़े-बुजुर्गों का अभिवादन अर्थात् नमस्कार करने वाले और बुजुर्गों की सेवा करने वालों की 4 चीजें हमेशा बढ़ती हैं। ये 4 चीजें हैं: आयु, विद्या, यश और बल। इसी वजह से हमेशा वृद्ध और स्वयं से बड़े लोगों की सेवा व सम्मान करना चाहिए।

3. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

भावार्थः महज इच्छा रखने भर से कोई कार्य पूरा नहीं होता, बल्कि उसके लिए उद्यम अर्थात् मेहनत करना जरूरी होता है। ठीक उसी तरह जैसे शेर के मुंह में सोते हुए हिरण खुद-ब-खुद नहीं आ जाता, बल्कि उसे शिकार करने के लिए परिश्रम करना होता है।

4. यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः।

चित्ते वाचि क्रियायांच साधुनामेकूपता॥

भावार्थः साधु यानी अच्छे व्यक्ति के मन में जो होता है, वो वही बात करता है। वचन में जो होता है यानी जैसा बोलता है, वैसा ही करता है। इनके मन, वचन और कर्म में हमेशा ही एकरूपता व समानता होती है। इसी को अच्छे व्यक्ति की पहचान माना जाता है।

5. न चोरहार्यं न राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।

व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

भावार्थः एक ऐसा धन जिसे न चोर चुराकर ले जा सकता है, न ही राजा छीन सकता है, जिसका न भाइयों में बंटवार हो सकता है, जिसे न संभालना मुश्किल व भारी होता है और जो अधिक खर्च करने पर बढ़ता है, वो विद्या है। यह सभी धनों में से सर्वश्रेष्ठ धन है।

6. षड् दोषाः पुरुषेणैव हातव्या भूतिमिच्छता।

निद्रा तद्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता॥

भावार्थः 6 अवगुण मनुष्य के लिए पतन की वजह बनते हैं। ये अवगुण हैं, नींद, तन्द्रा (थकान), भय, गुस्सा, आलस्य और कार्य को टालने की आदत।

7. काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।

अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं॥

भावार्थः एक विद्यार्थी के पांच लक्षण होते हैं। कौवे की तरह हमेशा कुछ नया जानने की प्रबल इच्छा। बगुले की तरह ध्यान व एकाग्रता। कुत्ते की जैसी नींद, जो एक आहट में भी खुल जाए। अल्पाहारी मतलब आवश्यकतानुसार खाने वाला और गृह-त्यागी।

8. रूप यौवन सम्पन्नाः विशाल कुल सम्भवाः।

विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धाः इव किंशुकाः॥

भावार्थ: अच्छा रूप, युवावस्था और उच्च कुल में जन्म लेने मात्र से कुछ नहीं होता। अगर व्यक्ति विद्याहीन हो, तो वह पलाश के फूल के समान हो जाता है, जो दिखता तो सुंदर है, लेकिन उसमें कोई खुशबू नहीं होती। अर्थात् मनुष्य की असली खुशबू व पहचान विद्या व ज्ञान ही है।

9. मूर्खस्य पञ्च चिह्नानि गर्वो दुर्वचनं मुखे।

हठी चैव विषादी च परोक्तं नैव मन्यते॥

भावार्थ: इस श्लोक में कहा गया है कि मूर्खों की पांच पहचान होती हैं। सबसे पहला अहंकारी होना, दूसरा हमेशा कड़वी बात करना, तीसरी पहचान जिद्दी होना, चौथा हर समय बुरी-सी शक्ल बनाए रखना और पांचवां दूसरों का कहना न मानना। श्लोक इन सभी पांच चीजों से बचने की प्रेरणा देता है।

10. दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यालंकृतो सन।

मणिना भूषितो सर्पः किमसौ न भयंकरः॥

भावार्थ: दुर्जन अर्थात् दुष्ट लोग भी अगर बुद्धिमान हों और विद्या प्राप्त कर लें, तो भी उनका परित्याग कर देना चाहिए। जैसे मणि युक्त सांप भी भयंकर होता है। इसका मतलब यह हुआ कि दुष्ट लोग कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों, उनकी संगत नहीं करनी चाहिए।

नाम: काव्या

कक्षा : षष्ठी अ

अनुक्रमांक : 12

पशुसंरक्षणम्

पशवः अस्माकं जीवनस्य अत्यन्तं आवश्यकाः भवन्ति। ते केवलं आहारस्य साधनं न, अपि तु अस्माकं संस्कृतेः, कृषेः, पर्यावरणस्य च महत्त्वपूर्णं अङ्गम्। गोरक्षायाः महत्त्वं वेदेषु अपि वर्णितम् अस्ति। पशवः अस्मभ्यं दुग्धं, ऊनं, अन्नं, चर्म च ददति।

आजकाल मनुष्यः स्वार्थेन पशून् हिंसति। शिकारः, वनच्छेदनम्, प्रदूषणम् इत्यादिभिः पशवः संकटे पतन्ति। यदि वयं पशून् रक्षामः न कुर्याम, तर्हि अस्माकं जीवनम् अपि संकटे भविष्यति।

पशुसंरक्षणं केवलं दया न, अपि तु धर्मः अपि अस्ति। अहिंसा अस्माकं राष्ट्रस्य मूलं मूल्यं अस्ति। तस्मात् अस्माभिः पशून् न मारयितव्यम्, न तेषां अधिकाराः हरितव्याः।

विद्यालयेषु, समाजेषु च पशुसंरक्षणस्य विषयः प्रचारः करणीयः। गृहे अपि बालकान् शिक्षयितव्यम् यत् पशवः अपि अस्माकं मित्राणि सन्ति।

नामः सहज

कक्षा : षष्ठी ब

अनुक्रमांक : 19

सूक्तयः

- (1) गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः । =गुरु ब्रह्मा - विष्णु - महेश के समान हैं ।
- (2) सर्वे भवन्तु सुखिनः , सर्वे सन्तु निरामयाः । =सभी सुखी हों , सभी नीरोग हों ।
- (3) उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः । =कार्य परिश्रम करने से पूर्ण होता है , मनोरथ करने से नहीं
- (4) दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति । =भाग्य देता है , ऐसा कायर कहते हैं , अथवा भाग्य के भरोसे कायर पुरुष रहते हैं ।
- (5) यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः । = यदि प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिले तो देखना चाहिए कि दोष कहाँ है ।
- (6) न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते । = ज्ञान के समान इस संसार में और कुछ पवित्र नहीं है ।
- (7) भोगो भूषयते धनम् । = धन की शोभा उसका उपभोग करने में है ।
- (8) विद्या धर्मेण शोभते । = विद्या धर्म से शोभा पाती है ।
- (9) सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् । = भरा हुआ घड़ा आवाज नहीं करता ।
- (10) सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् । = सन्तोष मनुष्य का सबसे बड़ा धन है ।
- (11) वस्तु क्रियावान् पुरुषः सः एव = जो क्रियाशील है , वही पुरुष है ।
- (12) मातृवत् परदारेषु =दूसरे की स्त्री माँ के समान है ।

नामः अभिजय दहिया

कक्षा : षष्ठी अ

अनुक्रमांक : 37

यत्नस्य महिमा (परिश्रम की महिमा)

यत्नं कुरु दिनं प्रति,
न हि श्रमेण हानिः।
फलमपि लभ्यते धैर्ये,
न कदापि आलस्यतः।
गगनं स्पृशति पक्षी,
न स जातः एकदा।
क्रमेण ऊर्ध्वं गच्छति,
तथा जीवने अपि च।
यः न श्रमं विन्दति,
स कदापि न सफलः॥

नामः सान्वी रंजन

कक्षा : षष्ठी ब

अनुक्रमांक : 33

आत्मबलम् (आत्मबल)

मा शोकं कुरु जीवने,
उत्तिष्ठ साहसं वह।
स्वबलं चिन्तय सर्वदा,
यः स्वं जानाति सः सुधीः।
अन्धकारे दीप इव,
प्रकाशय स्वमनः पथम्।
न खलु लघु अस्ति किञ्चन,
यदा दृढं चित्तं भवेत्।
जीवनं युद्धभूमिः इव,
विजयी भव नित्यदा॥

नामः लक्ष्म्य दुबे

कक्षा : अष्टमी स

अनुक्रमांक : 14

कालस्य मूल्यं (समय का मूल्य)

कालः गतः न प्रत्यागच्छति,
क्षणं मौल्यं अनन्तकम्।
यं यः साधयति सम्यक्,
सः इहैव फलं लभते।
न दीनो भव कदाचन,
न हि कालं क्षिपेयः।
प्रत्येकं क्षणं साधय,
यतः स एव जीवनः।
विलम्बो मृत्युं आनयति,
कालं रक्ष समयतः ॥

नामः दीपेश सिंह
कक्षा : सप्तमी ब
अनुक्रमांक : 20

नीति श्लोकाः

1. देवो रुष्टे गुरुस्ताता गुरो रुष्टे न कश्चनः ।

गुरुस्ताता गुरुस्ताता गुरुस्ताता न संशयः॥

भावार्थः देवताओं के रूठ जाने पर गुरु रक्षा करते हैं, किंतु गुरु रूठ जाए, तो उस व्यक्ति के पास कोई नहीं होता। गुरु ही रक्षा करते हैं, गुरु ही रक्षा करते हैं, गुरु ही रक्षा करते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। इसका मतलब यह है कि अगर पूरा विश्व व भाग्य भी किसी से विमुख हो जाए, तो गुरु की कृपा से सब ठीक हो सकता है। गुरु सभी मुश्किलों को दूर कर सकते हैं, लेकिन अगर गुरु ही नाराज हो जाए, तो कोई अन्य व्यक्ति मदद नहीं कर सकता।

2. अनादरो विलम्बश्च वैमुख्यम निष्ठुर वचनम्।

पश्चतपश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि च॥

भावार्थः अपमान व अनादर के भाव से दान देना, देर से दान देना, मुंह फेरकर दान देना, कठोर व कटु वचन बोलकर दान देना और दान देने के बाद पछतावा करना। ये सभी पांच बातें दान को पूरी तरह दूषित कर देती हैं।

3. अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

भावार्थः छोटे चित्त यानी छोटे मन वाले लोग हमेशा यही गिनते रहते हैं कि यह मेरा है, वह उसका है, लेकिन उदारचित्त अर्थात् बड़े मन वाले लोग संपूर्ण धरती को अपने परिवार के समान मानते हैं।

4. सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः ।

अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

भावार्थः हमेशा प्रिय और मन को अच्छा लगने वाले बोल बोलने वाले लोग आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन जो आपके हित के बारे में बोले और अप्रिय वचन बोल व सुन सके, ऐसे लोग मिलना दुर्लभ है।

8. अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

भावार्थः सभी 18 पुराणों में महर्षि वेदव्यास जी ने दो विशेष बातें कही हैं। पहली बात तो यह है कि परोपकार करना पुण्य है और दूसरी बात लोगों को दुख देना ही पाप है।

नामः सान्वी रावत

कक्षा : अष्टमी अ

अनुक्रमांक : 29



ENGLISH

Editorial



**"Full many a gem of purest ray serene
The dark unfathomed caves of ocean bear
Full many a flower is blush unseen
And waste its fragrance in the desert air"**

Many students have outstanding qualities that are inherent and remain unnoticed. They have ample talent but due to lack of exposure that talent remains hidden and gets wasted. They fail to recognize their true potential. They have in-depth virtues and creativity which when polished and engrossed on the canvas of life brings into limelight their otherwise unexplored strata of mind.

A teacher is a mentor and true guide to her students, to make them explore all their qualities and virtues.

In our magazine, we have tried to explore and publish true potential of our genius superstars and definitely they have done their best in writing original articles and self-composed poems.

**GOOD LUCK
Anita Bhalla
PGT ENG.**

A VISIT TO HISTORIC PLACE

KANGRA FORT, HIMACHAL PRADESH



During our recent trip to Himachal Pradesh, one of the most memorable experiences was visiting the Kangra Fort, located just a few kilometres from the town of Dharamshala. Surrounded by the majestic Dhauladhar ranges and set atop a hill, this ancient fort is not only a historical marvel but also a place filled with stories, legends, and breathtaking views.

As we approached the fort, the stone walls and tall gates gave a glimpse into its glorious past. Built by the royal family of Kangra, the fort is believed to be more than 1,000 years old, making it one of the oldest forts in India. The fort has witnessed many battles and invasions, including attacks by Mahmud of Ghazni and later, the Mughals.

Walking through the narrow passages and steep steps, we came across old temples, royal chambers, watchtowers, and even a museum that displayed weapons, coins, and artifacts from ancient times. The Ambika Devi Temple, located within the fort, is still visited by devotees and adds a spiritual aura to the place.

From the top of the fort, we could see the confluence of the Banganga and Manjhi rivers below and the entire Kangra valley stretching out in all directions. The cool mountain breeze and peaceful surroundings made the view even more special.

Visiting Kangra Fort was like stepping back in time. It made us appreciate the rich history of India and the architectural skills of our ancestors. Anyone visiting Himachal Pradesh should not miss this magnificent fort—it's a journey through history, nature, and culture all at once.

**AADWIKA RANA
VI - B**

Bring Back the Stars!

Have you ever looked up at the night sky and wondered where all the stars have gone? Our grandparents say they used to see thousands of twinkling stars. But today, we see only a few. Why? Because of light pollution.



The night sky, once a boundless canvas of winking stars and swirling nebulae, has become a pale, washed-out memory, swallowed by the relentless glow of our own making. Each upward glance now reveals not the cosmic ballet, but a hazy dome of orange and yellow, a testament to our insatiable need to illuminate every corner of our lives. From sprawling cityscapes to isolated rural highways, a million artificial suns burn, their collective brilliance eclipsing the ancient light of distant galaxies. This isn't just a loss for stargazers; it's an ecological assault, disorienting migrating birds, disrupting nocturnal wildlife, and subtly, yet profoundly, altering the very rhythm of life on Earth, leaving us adrift in a perpetual, artificial twilight.

ARSHNEET KAUR
IX-B

School Days

The bell it rings , a morning call
To halls and rooms , where shadows fall.
With books and dream and lessons learned,
Another day , a page is turned .

The chalk dust flies , the words take flight ,
Through stories told , and the future bright.
We share our thoughts , we laugh, we grow ,
In lessons learned , and seed we sow.

From tests and Friends , and all between,
A tapestry of scenes convene.
And we learn , and as we play,
We shape our lives , day by day .



Archita Tiwari (X - C)

Welcome to the Brain-Tickling Fun Zone!

Ever wondered what makes popcorn pop, why some animals glow in the dark, or how astronauts burp in space? Well, buckle up — you're about to step into a world where curiosity rules and boredom vanish like magic. This isn't your average bunch of fun facts — these are the wildest, weirdest, and most wonderful facts that will make your jaw drop and your brain go, "Whoa... really?!"

1. Popcorn pops at 180°C because it explodes like a mini volcano!

Inside each kernel of popcorn is a tiny drop of water. When heated, it turns into steam and builds up pressure until — BOOM! — it bursts open into the fluffy snack we all love.

2. You can't burp in space!

Why? Because there's no gravity to separate gas from liquid in your stomach. So if an astronaut tries to burp, it might end up being a "wet burp." Gross, right?

3. Some squids and jellyfish glow in the dark!

It's called bioluminescence — their bodies create light using special chemicals. They use it to scare off predators, attract food, or even talk to each other!

4. Elephants can "hear" with their feet!

Elephants pick up rumbling sounds from miles away through their feet. Vibrations travel up their legs to their brains. It's like having superpower ears in your toes!

5. Trees talk — yes, seriously!

Trees use underground fungal networks (nicknamed the Wood Wide Web) to "talk" to each other, warn about pests, and even share nutrients with sick neighbors.

6. Your brain actually freezes during a brain freeze!

When you eat something super cold too fast, the roof of your mouth chills blood vessels, causing your brain to freak out and go, "OUCH!" That's what we call a brain freeze.

7. Chickens are the closest living relatives to the T. Rex!

Yep, your backyard chicken has dinosaur DNA. In fact, scientists believe birds are modern dinosaurs that survived the big extinction.

8. Your brain can light a 20-watt bulb — just by thinking!

Your brain creates enough electrical energy to power a small light bulb. Thinking hard literally lights you up. 

9. There are more stars in the universe than grains of sand on Earth.

That's over 1,000,000,000,000,000,000,000 stars (that's 21 zeros!) — so the next time you look up at the sky, remember you're staring into infinity.

10. An octopus has three hearts and blue blood!

Two hearts pump blood to the gills, and one to the rest of the body. And their blood is blue because it's copper-based. Basically, they're alien-level cool.

If I Were the Prime Minister of India

If I were the Prime Minister of India, I would consider it the greatest honor and responsibility of my life. India is a land of rich culture, diversity, and talent, but like every nation, it faces challenges. As Prime Minister, I would work hard to make India stronger, fairer, and more advanced, while staying true to our values.



First of all, my main focus would be on education. I believe that a well-educated nation is a powerful nation. Therefore, I would make quality education free and accessible to all, especially in rural and backward areas. In addition to this, more attention would be given to practical learning, skill development, and digital literacy so that every child can dream big and achieve his/her goals. I would bring some transformative changes to the education system. It should be based on skills and knowledge, not just on grades. To explain further, students' true abilities should be assessed through diverse methods of evaluation, not just written exams.

Moreover, I would work on improving healthcare. I would ensure that every citizen has access to affordable and quality medical treatment. More hospitals and health centers would be opened in the villages. Along with this, I would promote mental health awareness and ensure that no one suffers in silence.

Furthermore, I would give high priority to employment and economic development. In order to overcome the problem of unemployment, I would promote the creation of more industries, but in an eco-friendly way. Job opportunities should be created without harming the environment. As a result, industries must be set up without cutting down forests. Everything should be done in a sustainable and responsible manner.

Another important goal would be to clean and protect the environment. I would launch stronger programs to reduce pollution, plant more trees, and promote the use of solar and renewable energy. Climate change is real, and thus, we must act now to save our future.

In addition, I would fight against corruption, which is a disease that weakens a nation. I would create stricter laws and ensure complete transparency in the government offices. As a result, every rupee of public money would be spent wisely and honestly.

India's defense system is already very powerful. However, I would do my best to provide our forces with the most advanced weapons. The manufacturing of fighter jets and other defense equipment should be done within the country to boost self-reliance.

Lastly, I believe that for a country to become truly developed, its citizens must be responsible and morally strong. To achieve this, I would appoint dedicated individuals to teach moral values through real-life experiences within their communities.

In conclusion, if I were the Prime Minister of India, I would dedicate myself fully to the service of the nation. I would listen to the people, learn from them, and lead with honesty, courage, and compassion.

"A nation becomes truly great when its people grow not just in skills, but also in character."

Vaishnavi Pandey (X- C)

Relishing the Rain

I sense a respite from scorching heat,
As winds are playing nature's beat.
Pitch dark clouds brighten up my heart,
A perfect canvas for a piece of art.
Now clouds have brought the magical rain,
Petrichor emanating is getting me insane.
As drops come down, my ecstasy is high,
With wide arms open, I face the sky.
These humble drops are purely a bliss,
Materialization of my fantasy-wish.
Occasional thunders add a big splendour,
Is there a sorcerer sitting above, I wonder!
The spell of rain is a spell of magic,
Making me fly, defying any logic.
I'm floored and high, at the same time,
Blabbering and jabbering, that somehow rhyme,
Unable to express my euphoric feel,
Relishing the rain with fervour and zeal!

Rishita Suman (IX- B)





Interesting Facts

1. Bananas are berries, but strawberries aren't.
2. Honey never spoils—archaeologists found edible honey in ancient Egyptian tombs.
3. Octopuses have three hearts and blue blood.
4. The Eiffel Tower can grow over 6 inches taller in summer due to metal expansion.
5. A group of flamingos is called a “flamboyance.”

Harshit Kaushik-IX-B

The Power of “YET”

There was a girl named Riya who loved to paint. She wanted to draw beautiful pictures like the artists she saw in the books. But whatever she painted, her lines were messy, and the colors didn't look right.

One day Riya's teacher asked the class to make a drawing for the school wall. **Riya** felt sad, she whispered **“I can't draw well.”**

Her teacher smiled and said **“You can't draw yet. But if you try and keep going, you'll get better.”**

Riya didn't give up. Every day after school, she practiced. Sometimes her pictures looked funny, but she laughed and tried again.

After a few weeks, something amazing happened as her drawings started getting better! She used colors nicely and her lines were smooth. When the final drawing day came Riya made a big bright picture of a garden full of butterflies and flowers.

The whole class clapped, and the teacher proudly put her picture on the wall.

Moral of the story:

Never say “I can't. Always say, “I can't YET”.

With practice and patience, you can do anything!

Prisha Verma

V-B

Book Review

Pride and Prejudice by Jane Austen



Pride and Prejudice is a classic novel written by Jane Austen in the late eighteenth-century England. It is based on the regency era and describes the situation of women—their plight, desires and mindset. The story revolves around Elizabeth Bennet, from a family of five sisters who are very different from one another. Being the second eldest after her sister Jane, she is burdened with expectations of pursuing a good life in future and getting into a profitable marriage. While her parents, especially her mother desperately look for suitable grooms for her daughters, Elizabeth focuses more on taking care of her younger sisters as well as her shy elder sister. Jane Austen has woven the character of Elizabeth as a unique woman—filled with self-respect, dignity and a strong general opinion. However, when Elizabeth breaks out of her comfort zone to attend a ball in the neighborhood, she understands her position in the society. This group of people consists of a young Englishman, Mr. Bingley, his two sisters and his friend, Mr. Darcy. Bingley admires Elizabeth's sister Jane, so the two families became closer. Elizabeth is very happy for her sister but in the meanwhile, she is met with rather ill behavior by Darcy, who considered her of low character, running after fortune like other women. Elizabeth started thinking of him as very proud and 'fastidious' and started disliking his character. But, the conflict in the middle of the book changes everything. While Jane and Bingley became a good acquaintance, Elizabeth started seeing Darcy on every occasion. She is motivated by her assumptions by many people around her. Gradually her notions start turning weak after change of situation such as when her youngest sister elopes without telling anyone, and Darcy's true nature comes forward.

The second half of the book is the climax where Elizabeth meets with her internal dilemma of what is right and what is wrong. She questions her beliefs and guarded emotions against a man she hardly knows. During this time she realizes how proud she has been herself and prejudiced against everything extraordinary. She also started accepting herself, despite of criticism for her low family background.

The best thing about this novel is how it differentiates between two different thought processes such as 'Vanity' and 'Pride' conveyed by Elizabeth's sister, Mary—"Vanity and pride are different things, though the words are often used synonymously. A person may be proud without being vain. Pride relates more to our opinion of ourselves, vanity to what we would have others think of us."

My recommendation for this book is based on the above account. For me, a book is complete when it balances the good and bad part of human nature in such a way, so that the reader gets inspired with it and would find themselves in the characters. The novel is an epitome of breaking societal tyranny. Elizabeth is portrayed as a typical woman with exceptional wisdom and grateful nature that defines her character as strong. But at the same time, her weaknesses are also conveyed that sends us a message that a perfect person does not exist. Also one cannot judge a person by first impression as behavior and nature are understood with time. I appreciate the book's language though it is a little difficult to read at first. The thing I liked about this book is how the fight between two people is shown in a respectful language as if they are not fighting at all.

I recommend this beautiful classic for those who like complex plots and characters of the real world. This book is an epitome of literary brilliance.

Don't compare your child with others

I belong to a very typical society where I have found a lot of problems. Here I want to discuss the bad habit of our elders. You might be taunted that your performance is lower than the neighbour's child and your parents and the family members start comparing you with them. This is a huge problem in society. They just want good marks from you, never ask you about your health and the mental tension. The society will never help you in your failures but their taunts will target you as fast as a bullet train. They don't see the problems and failure points in your life but take a lot of interest in your problem and your academic progress. There is a lot of need for our society and parents to support us in our difficult times of life. We need time to solve the problems. We need someone to discuss the problems and issues that we face at times. We need guidance regarding that. This would be helpful when your parents and society understand you. So, at the end, I would suggest parents and society to help their child with difficult problems.

Lucky
XI-B

A Change I would Like to Bring in Society

If I am given a chance to bring any change in the modern society, I would like to change the mindset of the society. The mindset, our society keeps, eventually shapes what the growing generation learns. For development, a mindset plays a vital part. For example, in rural areas, girls are not encouraged to go to school. Instead, they are taught how to cook, feed and wash clothes etc. Whereas, in urban areas since women are encouraged to study, many of them play an important role in the development of our country. The latest example is "Operation Sindoor". During Operation Sindoor, females played a prominent role in planning and carrying out the counter attack. However, since time is changing people are also changing, but very slowly. Society often treats people differently showing varying unfair ways for everyone.

Arihant Singh Rawat
XI- B

Unforgettable moment

Unforgettable moments are so precious that they always have a place in our hearts and minds. These moments are so special that we can't even imagine forgetting them. Sometimes, these moments are special and sometimes they are sad also. That's why they are unforgettable. One of the most special events that happened in my life was when I was in class 7 in Varanasi, I used to love dancing and at that time also dancing was my favourite.

My family members, my teachers, friends, and relatives used to praise me for my dancing skills. They also motivated me to participate in the School Regional Dance competition which was conducted by 5 schools, including Kendriya Vidyalaya, my school. After their motivation and my interest in dancing, I participated in a regional dance competition with all my heart. I practised day and night so that I could win that competition. On seventh August 2021, the competition was held in Rajasthan and on that day when results were going to be declared, I was so tense.

But at the Regional dance competition, I secured second position and that was the best moment of my life. Unfortunately, I could not score the first position.

Bhavya Upadhyay

XI- B

Nature – Longs for Healing

In today's society the people are so much busy in their lives that they forget about mother nature who gave them a place to live their life. People are totally aware about the destruction caused by them to the mother nature. Today, people think what is the role of nature in their daily life. So, they don't care about it. But they forget they are performing their daily activities because of the 'nature' on earth. There are multiple species of flora and fauna going to be extinct due to human interruption in nature. Some people think, it is a normal problem, but due to its rapid extinction, the healing power of the earth is continuously decreasing and the phenomenon also affects the human life. So, it has become a big problem. We need to think on it. Because if we do not solve this problem, the nature automatically starts solving the problem by using its own methods and these methods are not so good for the earth and for the species living on it. So, I think our society needs to start taking action on this.

Aditya Raj Jha

XI- B

The Stranger

There lives a man,
Who brings joy in my life.
There lives a man,
Who is a shield to me?
Came as a stranger,
But now it is important to me.

Time passes, situation changes,
But he remains constant.
There lives a man,
Who loves me.....

GIST OF THE POEM:

Consider yourself lucky if someone loves you with all his/her heart. Consider yourself lucky if you have a person that always stands by your side no matter what the situation is. Situation changes but not your persona, He/she adds peace or joy to your life, he/she tries to protect you then you are more than lucky. For me that person was once a stranger to me but now a significant part of my life.

Komal
XI- B

Phobia of my life

I had a phobia of using a sewing machine. When it is in use, it creates some sound and the needle goes up and down. I heard about the people who had got hand injuries due to sewing machines as it is quite heavy, I also heard about the things like his/her hand got sewed with clothes. In my childhood, my grandmother bought my mother a sewing machine.

When my mother used to sew something, I would look at the machine and pray to God that she would not get hurt by it until one day when I grew up as a teenager. I asked my mother if she could teach me sewing, she agreed without hesitation. I was shocked that she did not care about me and that I would never be able to do it. She said, "come and hold the machine". I was so scared that my heartbeat became faster and faster. I was hesitating but somehow, I went near it and sat there. My mother said, "Go on, I will demonstrate once only". She demonstrated but it was my turn to use that machine. I was panicking and I was about to try but I was not able to do it. But when I touched and started sewing, my eyes were only focused on the foot of the machine. I feared that I would sew my hands with the clothes too. What if my hands got injured and I won't be able to use them forever! Slowly with time, I realised that it was not that hard to do it. Now I'm good at sewing things and don't have fears anymore and my goal is to become a fashion designer.

Sonali Kashyap, XII- D



A Day at Our School



At 6:50 sharp, we all rush in,
The day begins with a fresh new grin.
Assembly echoes in morning light,
With prayers and thoughts, we feel so right.



The bell then rings it's Period One,
Smart boards glow, and the lessons run.
No chalk dust now, just screens so bright,
Our classroom shines in modern light.



From Math to English, Science to Art,
Each teacher plays a guiding part.
With every bell, we move ahead,
With facts and dreams inside our head.

Then 9:30, our tummies growl,
We sit with friends, laugh loud and howl.
Lunch break joy in every bite,
Sharing stories, keeping spirits light.



But oh! This year, a change took place
Section C has now lost its space.
Some friends went to B, some stayed with me,
In Section A, where I now be.



A DAY AT OUR SCHOOL

It's odd sometimes, this class divide,
Half my heart on the other side.
Yet in the halls, we still unite,
A bond of friends that feels just right.

From Period Two to Number Eight,
We learn, we grow, we celebrate.
The final bell at 12:25,
We pack our bags, feeling alive.

So here's to school our second home,
With friends and dreams where we all roam.
Each day a page in our book of youth,
A time of laughter, learning, truth.



BY KANCHAN BORA
CLASS 10TH C
ROLL NO - 8

"LIFE ACCOUNTING"

What comes I credit
What goes I debit
My birthday is my opening stock
My ideas are my asset
My views are my liabilities
Happiness is my profit
Sorrow is my inspiration
Soul is my good will of asset
Duties are my outstanding experience
Working is my prepaid expense
Friendship is my hidden adjustment
Character is my capital
Bad things I always depreciate
Good things I always appreciate
Patience is my interest
Knowledge is my investment
My mind is my bank balance
Thinking is my current account
Behaviour is my journal entry
Aim is to tally the balance – sheet
Death is not my closing stock

My knowledge will continue forever
Forever, forever and ever...

RISHITA SUMAN

IX- B

"The Earth Remembers"

She moves in silences dressed in green, Veins of
rivers, breath unseen. Mountains wear her sleeping
face, Time etched softly into space.

The wind rewinds forgotten names, A choir of dust,
of ancient flames. The soil, a book with open palms,
Telling stories sung in psalms.

Footsteps fall like prayers to ground— Each echo
shaped by where it's bound. Even the rain has
memory's ache, Tapping softly for hearts to wake.

Cities rise with glass and steel, A crown atop a
spinning wheel. But still, beneath the humming
light, The roots recall the longest night.

She knows the weight of broken things: Of silence
stitched with golden strings, Of birds that lost the
sky to stone, Of seeds that dream while all alone.

The stars lean close to brush her skin, And tides
confess what lies within. She listens not with ears
but breath, To birth, to bloom, to life, to death.

In every scar, a bloom takes hold— A truth the
aching can enfold. The Earth, a mother, fierce and
wise, With morning woven in her eyes.

So walk her halls with tender tread, Leave whispers
where your thoughts have bled. She may not speak
the way we do— But in your silence, she hears you
too.

SAARTH SINGH

V- B

GLIMPSES OF ACTIVITIES

INDEPENDENCE DAY CELEBRATION



स्वच्छता पखवाड़ा



TEACHERS' DAY CELEBRATION



NATIONAL SPORTS DAY



संस्कृत सप्ताह-2025



